INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

UPSC – CSE

(संघ लोक सेवा आयोग)

(हिंदी माध्यम)

प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा हेतु

सत्यमेव जयते
UPSC

भाग – 2

प्राचीन एवं मध्यकाल का भारत

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**UPSC-CSE (IAS/IPS/IFS) (हिंदी माध्यम)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को **संघ लोक सेवा आयोग** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"सिविल सेवा परीक्षा (प्रारंभिक एवं मुख्य)"** में पूर्ण संभव मदद करेंगें।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp कीजिए - https://wa.link/6bx90g

Online Order कीजिए - https://shorturl.at/SgSVX

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	इतिहास का अध्ययन क्यों • प्राचीन भारत का निर्माण	1
2.	भारत में प्रागैतिहासिक युग • पाषाण युग • लौह युग • ताम्र युग	5
3.	सिंधु घाटी सभ्यता (3300-1400 ई. पू.) • सैन्धव स्थल • सिन्धु सभ्यता का विश्लेषणात्मक अध्ययन	15
4.	वैदिक सभ्यता • पूर्व वैदिक काल / ऋग्वैदिक काल (1500 - 1000 ईसा पूर्व) • उत्तर वैदिक काल (1000 - 600 ईसा पूर्व)	27
5.	बौद्ध धर्म और जैन धर्म	38
6.	मौर्य साम्राज्य • मौर्य साम्राज्य को जानने के स्रोत • मौर्य वंश के शासक • मौर्य प्रशासन • मौर्यकालीन कला और मूर्तियाँ • मौर्य साम्राज्य का पतन	51
7.	कुषाण साम्राज्य • उत्पत्ति • उपलब्धियाँ • कनिष्क का शासन	67
8.	मौर्योत्तर काल • मौर्योत्तर काल में शिल्प, व्यापार और शहरी बस्तियाँ • शुंग राजवंश • शक युग • सातवाहन राजवंश • कण्व राजवंश • चेदि राजवंश	69
9.	भारतीय संस्कृति का विदेशों में प्रसार	85
10.	गुप्त साम्राज्य • गुप्त साम्राज्य की उत्पत्ति	92

	• गुप्त साम्राज्य के शासक • गुप्त प्रशासन व अर्थव्यवस्था • विज्ञान, कला और वास्तुकला, सामाजिक संस्कृति और धर्म • गुप्त काल के प्रमुख साहित्यिक कार्य और लेखक	
11.	गुप्तोत्तर काल • नए राज्यों का गठन • दक्कन • सुदूर दक्षिण के राज्य	101
12.	राजा हर्षवर्धन	109
13.	विज्ञान और सभ्यता में विरासत	110
14.	प्राचीन भारत का कालक्रम	112

मध्यकालीन इतिहास

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	परिचय	114
2.	प्रारंभिक मध्यकाल (600-1200 ईस्वी) • हर्ष के बाद कन्नौज या कन्नौज के लिए संघर्ष • कन्नौज के आयुध शासक • कन्नौज और त्रिपक्षीय संघर्ष	116
3.	त्रैतीयक संघर्ष (750 - 1000 ईस्वी)	118
4.	उत्तर भारतीय राज्य • राजपूतों के बारे में • शाकम्भरी के चाहमान या चौहान • कन्नौज के गहड़वाल • त्रिपुरी के कलचुरी • कार्कोट राजवंश • उत्पल राजवंश • लोहार राजवंश का उदय • सिंध पर अरबों की विजय	119
5.	दक्षिण के साम्राज्य • चोल • चालुक्य (छठी - बारहवीं शताब्दी ईस्वी) • राष्ट्रकूट (आठवीं - दसवीं शताब्दी ईस्वी) • द्वारसमुद्र के होयसल (ग्यारहवीं - चौदहवीं शताब्दी ईस्वी) • वारंगल के काकतीय (बारहवीं - चौदहवीं शताब्दी ईस्वी)	136

	• देवगिरि के यादव (850–1334 ईस्वी)	
6.	राष्ट्रकूट वंश	141
7.	भारत में महत्वपूर्ण मुस्लिम वंश और शासक • महमूद ग़ज़नवी	145
8.	दिल्ली सल्तनत (1206–1526 ईस्वी) • गुलाम वंश (1206–1290 ईस्वी) • खिलजी वंश (1290–1320 ईस्वी) • तुग़लक वंश (1320–1413 ईस्वी) • सैय्यद वंश (1414–1451 ईस्वी) • लोदी वंश (1451–1526 ईस्वी) • दिल्ली सल्तनत का प्रशासन • दिल्ली सल्तनत की अर्थव्यवस्था • सामाजिक जीवन, स्थापत्य एवं साहित्यिक विकास • दिल्ली सल्तनत के पतन के कारण	147
9.	अधीनस्थ सल्तनत काल के दौरान छोटे राज्य • भारत पर तैमूर का आक्रमण : कारण और परिणाम • भारत में तुर्की आक्रमण	171
10.	दक्कन सल्तनत • परिचय • बीजापुर सल्तनत • गोलकुंडा सल्तनत • अहमदनगर सल्तनत • बीदर सल्तनत • दक्षिण भारत में बेरार सल्तनत • दक्कन सल्तनत का पतन	177
11.	प्रांतीय राज्यों का उदय • दक्कन और दक्षिण भारत • विजयनगर साम्राज्य • बहमनी साम्राज्य	179
12.	पश्चिमी भारत के प्रांतीय राज्य – गुजरात • मुज़फ़्फ़रिद वंश • मालवा • मेवाड़ उत्तरी भारत के प्रांतीय राज्य • कश्मीर • शाह मीर वंश (1339 – 1555 ईस्वी) • चक वंश (1555 – 1586 ईस्वी) पूर्वी भारत के प्रांतीय राज्य	190
13.	भक्ति और अन्य सांस्कृतिक एवं धार्मिक आंदोलन	198

	• भक्ति आंदोलन • सिख आंदोलन • सूफ़ीवाद	
14.	मुगल साम्राज्य • मुग़ल काल (1526-40 और 1555-1857) • मुग़ल साम्राज्य का इतिहास • आर्थिक और सामाजिक जीवन • कृषि विकास • व्यापार का विकास • मुग़लों के अधीन सांस्कृतिक विकास • बाबर (1526-1530 ईस्वी) • हुमायूँ • अकबर • शाहजहाँ (लगभग 1628-1658 ईस्वी) • औरंगज़ेब • परवर्ती मुग़ल • मुग़ल साम्राज्य का पतन	214
15.	सूर वंश • शेरशाह सूरी • शेरशाह का प्रशासन • शेरशाह का मूल्यांकन • शेरशाह सूरी की सैन्य उपलब्धियाँ • सूर वास्तुकला	258
16.	मध्यकालीन भारत और विदेशी यात्री	261
17.	मुगल काल में वास्तुकला	263
18.	मराठा साम्राज्य और अन्य प्रांतीय राज्य • मराठा • मराठा साम्राज्य की उत्पत्ति • शिवाजी और अन्य शासकों के अधीन मराठा • शिवाजी के बाद मराठा • पेशवा काल के दौरान मराठा साम्राज्य • मराठा परिसंघ (1720-1818): • पानीपत का तीसरा युद्ध • मराठा साम्राज्य का पतन • सालबाई की संधि पर हस्ताक्षर [17 मई, 1782] • अन्य प्रांतीय राज्य • आंग्ल-मराठा युद्ध मध्यकालीन भारत का अंत	267

अध्याय - 2
भारत में प्रागैतिहासिक युग

प्रागैतिहासिक युग उस समय को कहते हैं जब लेखन और विकास का अस्तित्व नहीं था। यह युग पाँच कालखंडों में बंटा हुआ है – पुरापाषाण, मध्यपाषाण, नवपाषाण, ताम्रपाषाण और लौह युग।।

स्रोत	साक्ष्य	जानकारी
भौतिक अवशेष	रेडियो-कार्बन डेटिंग एक पद्धति है जिससे किसी वस्तु की आयु का निर्धारण किया जाता है।	• जीवनशैली के लगभग हर पहलू को समझने में मदद करता है जैसे- मिट्टी के बर्तन, घर बनाने की डिज़ाइन, कृषि (उगाए गए अनाज), पालतू जानवर, औजार, हथियार, दफनाने की प्रथाएँ आदि। • **ऊर्ध्वाधर खुदाई** – यह भौतिक संस्कृति का कालक्रमिक अनुक्रम प्रदान करती है। • **क्षैतिज खुदाई** – यह एक विशेष संस्कृति के बारे में संपूर्ण जानकारी प्रदान करती है।
सिक्के	सिक्कों का अध्ययन 'न्युमिस्मैटिक्स' कहलाता है।	• प्रारंभिक सिक्कों में बहुत कम प्रतीकों का उपयोग होता था; बाद के काल में सिक्कों पर राजाओं, देवताओं के नाम या तिथियाँ अंकित होती थीं। ये सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक इतिहास को कालक्रम सहित निर्माण में मदद करते हैं। • सिक्के स्थानीय और विदेशी लेन-देन की जानकारी देते हैं, जो शासक वंशों और उनके साम्राज्य की सीमा को बताता है। • सिक्कों की धातु और संख्या व्यापार, वाणिज्य और समृद्धि के स्तर को दर्शाती है। • गुप्त काल के बाद के कुछ सिक्के व्यापार व वाणिज्य के पतन को सूचित करते हैं।
लिपियाँ और शिलालेख	शिलालेखों का अध्ययन 'एपिग्राफी' कहलाता है; प्राचीन लेखों का अध्ययन 'पैलियोग्राफी' कहलाता है।	• हड़प्पा शिलालेखों का अभी तक सही रूप से अर्थ नहीं निकाला जा सका है। • दक्षिण भारत में – मंदिरों की दीवारों पर शिलालेख पाए जाते हैं। • शिलालेखों में राजकीय आदेश, धार्मिक और सामाजिक निर्णय, और प्रशासनिक मामलों की जानकारी दी जाती है (जैसे अशोक के शिलालेख)। • अशोक के शिलालेख: ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक और अरबी लिपियों का उपयोग हुआ। • दान, भूमि दान और सम्राटों की उपलब्धियाँ (जैसे समुद्रगुप्त और पुलकेशिन द्वितीय)।
साहित्यिक स्रोत	चार वेद, रामायण और महाभारत, स्मृतियाँ और धर्मसूत्र, काव्य, जैन और बौद्ध ग्रंथ, नाटक आदि।	• प्राचीन समय की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थिति के बारे में जानकारी मिलती है। • भारत में प्राचीन ग्रंथ बर्च के छिलके और ताड़ पत्रों पर लिखे जाते थे। • कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' राजा के कार्य, राजनीति, प्रशासन और समाज से संबंधित समृद्ध जानकारी प्रदान करता है। • पुराणों में गुप्त काल तक वंशावली का इतिहास मिलता है। • ये स्रोत भाषा, लिपि और लेखन शैली के प्रयोग को भी दर्शाते हैं।
विदेशी स्त्रोत	आधिकारिक इतिहासकारों, राजनयिकों, तीर्थयात्रियों या यहां तक कि नाविकों/खोजकर्ताओं के रूप में यूनानियों, रोमनों या चीनियों के विवरण।	• सिकंदर के आक्रमण का पुनर्निर्माण पूरी तरह से यूनानी स्रोतों के आधार पर किया गया है। • मेगस्थनीज की "इंडिका" से मौर्य काल के बारे में जानकारी मिलती है। • प्लिनी के "नेचुरलिस हिस्टोरिया" में भारत और रोमन साम्राज्य के बीच व्यापार असंतुलन का वर्णन किया गया है। • उस समय के राजाओं द्वारा इन यात्रियों का स्वागत किया गया और उन्होंने जो कुछ भी देखा, उसके बारे में लिखा, चाहे वह वास्तुकला, सामाजिक विभाजन, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाएं हों।

❖ प्रागैतिहासिक काल

- यह मानव इतिहास का 200000 ईसा पूर्व और 3500-2500 के बीच का काल है जब पहली सभ्यताएँ प्रकट हुईं।
- इसमें 5 काल शामिल हैं - पुरापाषाण, मध्यपाषाण, नवपाषाण, ताम्रपाषाण और लौह युग।

भारत में प्रागैतिहासिक काल - औजारों के अनुसार

प्राचीन इतिहास को तत्कालीन लोगों द्वारा उपयोग किये गये उपकरणों के अनुसार विभिन्न कालों में विभाजित किया जा सकता है।

1. **पुरापाषाण काल (पुराना पाषाण युग):** 500,000 ईसा पूर्व - 10,000 ईसा पूर्व

2. **मेसोलिथिक काल (उत्तर पाषाण युग)**: 10,000 ईसा पूर्व - 6000 ईसा पूर्व
3. **नवपाषाण काल (नव पाषाण युग)**: 6000 ईसा पूर्व - 1000 ईसा पूर्व
4. **ताम्रपाषाण काल (पाषाण ताम्र युग)**: 3000 ईसा पूर्व - 500 ईसा पूर्व
5. **लौह युग**: 1500 ईसा पूर्व - 200 ईसा पूर्व

पाषाण युग (लिथिक काल):

पाषाण युग प्रागैतिहासिक काल है, अर्थात लिपि के विकास से पहले का काल, इसलिए इस अवधि के लिए जानकारी का मुख्य स्रोत पुरातात्विक उत्खनन है। रॉबर्ट ब्रूस फूट वह पुरातत्वविद् हैं जिन्होंने भारत में पहला पुरापाषाण उपकरण, पल्लवरम हैंडएक्स की खोज की थी।

भूवैज्ञानिक युग, पत्थर के औजारों के प्रकार और तकनीक, और निर्वाह आधार के आधार पर, भारतीय पाषाण युग को मुख्य रूप से तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है-

पुरापाषाण काल (प्राचीन पाषाण काल): अवधि - 500,000 - 10,000 ईसा पूर्व

मध्यपाषाण काल (उत्तर पाषाण काल): अवधि - 10,000 - 6000 ईसा पूर्व

नवपाषाण काल (नवीन पाषाण काल): अवधि - 6000 - 1000 ईसा पूर्व

प्रारंभिक भारतीय इतिहास पाषाण युग की संस्कृतियों से शुरू होता है जिसमें मानव प्रजाति ने अपने अस्तित्व के लिए पत्थर ('ग्रीक में लिथोस') के औजारों का उपयोग किया।

पुरापाषाण काल (पुराना पाषाण काल)

'पलायोलिथिक' शब्द ग्रीक शब्द 'पैलेओ' से लिया गया है, जिसका अर्थ है पुराना और 'लिथिक' का अर्थ है पाषाण। इसलिए, 'पुरापाषाण काल' का अर्थ है पुराना पाषाण काल। भारत का पुराना पाषाण काल या पुरापाषाण संस्कृति प्लेइस्टोसीन काल या हिम युग में विकसित हुई थी। यह एक भूवैज्ञानिक काल था, जब पृथ्वी बर्फ से ढकी हुई थी और मौसम इतना ठंडा था कि मानव या पौधों का जीवन जीवित नहीं रह सकता था। लेकिन उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में, जहाँ बर्फ पिघल गई थी, वहाँ मनुष्य की प्रारंभिक प्रजातियाँ जीवित रह सकती थीं।

पुरापाषाण काल (पुराना पाषाण काल) की मुख्य विशेषताएँ:

1. भारतीय लोग 'नेग्रिटो' जाति से संबंध रखते थे और वे खुले आकाश में, नदी की घाटियों, गुफाओं और चट्टान शरणगाहों में रहते थे।
2. वे खाद्य संग्रहकर्ता थे, जंगली फल और सब्जियाँ खाते थे और शिकार पर निर्भर रहते थे।
3. उन्हें घरों, बर्तनों या कृषि का ज्ञान नहीं था। केवल बाद के चरणों में उन्होंने आग का उपयोग करना सीखा।
4. ऊपरी पुरापाषाण काल में चित्रकला के रूप में कला के प्रमाण मिलते हैं।
5. मनुष्यों ने अपरिष्कृत और कठोर पत्थरों का उपयोग किया, जैसे कि हाथ की कुल्हाड़ी, चॉपर, ब्लेड, बुरीन और स्क्रेपर्स।

भारत में पुरापाषाण काल के मनुष्यों को 'क्वार्जाइट' मनुष्य भी कहा जाता है क्योंकि उनके द्वारा उपयोग किए गए पाषाण उपकरण एक कठोर पत्थर 'क्वार्जाइट' से बनाए गए थे।

भारत में पुराना पाषाण काल (पुरापाषाण काल) को तीन चरणों में बांटा गया है, जो पाषाण उपकरणों के प्रकार और जलवायु परिवर्तन के अनुसार निर्धारित होते हैं।

1. निम्न पुरापाषाण काल: 1,00,000 ईसा पूर्व तक
2. मध्य पुरापाषाण काल: 1,00,000 ईसा पूर्व – 40,000 ईसा पूर्व
3. उच्च पुरापाषाण काल: 40,000 ईसा पूर्व – 10,000 ईसा पूर्व

निम्न पुरापाषाण काल (प्रारंभिक पुरापाषाण काल)

- यह हिम युग के बड़े हिस्से को कवर करता है।
- शिकारी और खाद्य संग्रहकर्ता थे; उपयोग किए गए औजार थे हाथ की कुल्हाड़ी, चॉपर और क्लिवर। औजार खुरदरे और भारी होते थे।
- निम्न पुरापाषाण काल की सबसे प्रारंभिक स्थलों में से एक महाराष्ट्र का बोरि है।
- औजार बनाने के लिए चूना पत्थर का भी उपयोग किया गया था।

निम्न पुरापाषाण काल के प्रमुख स्थल

- सोआन घाटी (वर्तमान पाकिस्तान में)
- थार रेगिस्तान में स्थल
- कश्मीर
- मेवाड़ के मैदान
- सौराष्ट्र
- गुजरात
- मध्य भारत
- दक्कन पठार
- छोटानागपुर पठार
- कावेरी नदी के उत्तर में
- उत्तर प्रदेश का बेलन घाटी
- यहाँ निवास स्थलों में गुफाएँ और चट्टान शरणगाह शामिल हैं।
- एक महत्वपूर्ण स्थल मध्य प्रदेश में भीमबेटका है।

(अ): निम्न पुरापाषाण काल [7,00,000 ईसा पूर्व – 1,00,000 ईसा पूर्व] (हॉमो एरेक्टस)

विकास	मांस को भूनने और जानवरों से बचने के लिए आग को नियंत्रित करना सीखा।

	शिकार और खाद्य संग्रहण। पेड़ों और गुफाओं में रहते थे।
औजार	साधारण चॉपर (काटने के लिए) यानी कच्चे और खुरदरे औजार जो कंकड़ों से बनाए जाते थे।
उदाहरण (औजार)	हाथ की कुल्हाड़ियाँ और क्लिवर।
स्थल	बोरि, दिदवाना, भीमबेटका, अत्तिरामपक्कम, नागर्जुनकोंडा आदि।

मध्य पुरापाषाण काल

- उपयोग किए गए औजार थे फ्लेक्स, ब्लेड, प्वाइंटर्स, स्क्रेपर्स और बोरर्स।
- औजार छोटे, हल्के और पतले होते थे।
- हाथ की कुल्हाड़ियों के उपयोग में अन्य औजारों की तुलना में कमी आई।

महत्वपूर्ण मध्य पुरापाषाण काल के स्थल

- उत्तर प्रदेश की बेलन घाटी
- लूनी घाटी (राजस्थान)
- सोन और नर्मदा नदियाँ
- भीमबेटका
- तुंगभद्रा नदी घाटियाँ
- पोटवार पठार (इंदस और झेलम के बीच)
- सांगहाओ गुफा (पेशावर, पाकिस्तान के पास)

(ब): मध्य पुरापाषाण काल [1,00,000 ईसा पूर्व – 40,000 ईसा पूर्व] (नियान्डर्थल)

विकास	**इस अवधि में भाषा का आविष्कार हुआ + शिकार और खाद्य संग्रहण जारी रखा।**
औजार	कठोर पत्थर सामग्री जैसे फ्लिंट से बनाए गए परिष्कृत और हल्के औजार।
उदाहरण (औजार)	फ्लेक्स पर आधारित विविध औजार: ब्लेड्स, प्वाइंटर्स, स्क्रेपर्स और बोरर्स।
स्थल	नेवासा, भीमबेटका, दिदवाना, बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश) आदि।

उच्च पुरापाषाण काल

- उच्च पुरापाषाण काल हिम युग के अंतिम चरण के साथ मेल खाता है, जब मौसम तुलनात्मक रूप से गर्म और कम आर्द्र हो गया।
- **होमो सैपियन्स** का उदय हुआ।
- इस काल की विशेषता औजारों और तकनीकी नवाचारों से है। हड्डी के औजारों की एक बड़ी संख्या पाई गई, जिनमें सुइयाँ, हार्पून्स, समानांतर ब्लेड, मछली पकड़ने के औजार और बुरीन औजार शामिल हैं।

उच्च पुरापाषाण काल के प्रमुख स्थल

- भीमबेटका (भोपाल के दक्षिण) – यहाँ हाथ की कुल्हाड़ियाँ, क्लिवर, ब्लेड, स्क्रेपर्स और कुछ बुरीन पाए गए।
- बेलन
- सोन
- छोटा नागपुर पठार (बिहार)
- महाराष्ट्र
- उड़ीसा
- आंध्र प्रदेश में पूर्वी घाट
- हड्डी के औजार केवल आंध्र प्रदेश के कर्नूल और मचछतला चिंतामणि गवी की गुफा स्थलों पर पाए गए।

(स): उच्च पुरापाषाण काल [40,000 ईसा पूर्व – 10,000 ईसा पूर्व] (होमो सैपियन्स)

विकास	इस समय तक अन्य होमिनिन प्रजातियाँ समाप्त हो चुकी थीं।
औजार	उपकरण और भी परिष्कृत और हल्के । ये बैक्ड ब्लेड होते थे, जिनमें दो किनारे कटाई वाले होते थे।
उदाहरण (औजार)	ब्लेड्स, स्क्रेपर्स, और बुरीन को हैंडल में फिट किया जा सकता था; हड्डी के औजार जैसे सुइयाँ, हार्पून्स आदि।
स्थल	रेणिगुंटा, बार्डिया, बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश), पटना आदि।

मेसोलिथिक काल (मध्य पाषाण काल)

मेसोलिथिक शब्द दो ग्रीक शब्दों – 'मेसो' और 'लिथिक' से लिया गया है। ग्रीक में 'मेसो' का मतलब है मध्य और 'लिथिक' का मतलब है पाषाण। इसलिए, प्रागैतिहासिक काल का मेसोलिथिक चरण को 'मध्य पाषाण काल' भी कहा जाता है।

मेसोलिथिक और नवपाषाण दोनों चरण होलोकिन युग से संबंधित हैं। इस युग में तापमान में वृद्धि हुई, जलवायु गर्म हुई, जिससे बर्फ पिघलने लगी और वनस्पति और जीवों में बदलाव आया।

मेसोलिथिक काल की विशेषताएँ

- इस काल के लोग प्रारंभ में शिकार, मछली पकड़ने और खाद्य संग्रहण पर निर्भर थे, लेकिन बाद में उन्होंने पशुओं को पालतू बनाना और पौधों की खेती करना शुरू किया, जिससे कृषि की नींव पड़ी।
- सबसे पहला पालतू जानवर कुत्ते का जंगली पूर्वज था। बकरियाँ और भेड़ें सबसे सामान्य पालतू जानवर थे।
- मेसोलिथिक काल के लोग अर्ध-स्थायी बस्तियों में रहते थे और साथ ही गुफाओं और खुले मैदानों का भी उपयोग करते थे।
- इस काल के लोग जीवन के बाद जीवन में विश्वास करते थे और इसलिए मृतकों को खाद्य पदार्थों और अन्य सामान के साथ दफनाते थे।

नवपाषाण काल की विशेषताएँ

- ***औजार और हथियार*** – *नवपाषाणकाल के लोग माईक्रोलिथिक ब्लेड्स के अलावा चिकने पत्थरों से बने औजारों का भी उपयोग करते थे। ज़मीन और पॉलिश किए हुए हाथ के कुल्हाड़ियों के लिए सेल्ट का उपयोग विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। इसके अलावा, हड्डी से बने औजार और हथियार जैसे सुइयाँ, खुरचने वाले औजार, बोरर्स, तीर के सिर आदि का भी उपयोग किया जाता था। नए पॉलिश किए गए औजारों के उपयोग से मनुष्यों के लिए खेती, शिकार और अन्य गतिविधियाँ करना आसान हो गया था।*
- ***कृषि*** – *नवपाषाणकाल के लोग भूमि की खेती करते थे और फल, रागी और कुल्थी जैसी फलियाँ उगाते थे। वे गाय, भेड़ और बकरियाँ भी पालते थे।*
- ***मिट्टी के बर्तन*** – *कृषि के आगमन के साथ, लोगों को अपने खाद्य पदार्थों को स्टोर करने के साथ-साथ पकाने और खाने के लिए बर्तनों की आवश्यकता पड़ी। इसलिए इसे इस युग में बर्तनों का व्यापक रूप से प्रकट होना कहा जाता है। इस काल के बर्तन को ग्रेवेयर, ब्लैक-बर्निशडवेयर और मेट इम्प्रेस्डवेयर में वर्गीकृत किया गया था। नवपाषाण काल के प्रारंभिक चरण में हस्तनिर्मित बर्तन बनाए जाते थे, लेकिन बाद में, पाटी पहियों का उपयोग बर्तन बनाने के लिए किया गया।*
- ***आवास और स्थिर जीवन*** – *नवपाषाण काल के लोग आयताकार या गोल आकार के घरों में रहते थे, जो मिट्टी और बांस से बने होते थे। नवपाषाणकाल के लोग नाव बनाना भी जानते थे और सूत, ऊन कातने और कपड़ा बुनने की कला में भी पारंगत थे। नवपाषाण काल के लोग एक स्थिर जीवन जीते थे और यही सभ्यता की शुरुआत का मार्ग प्रशस्त करता था।*
- *नवपाषाण काल के लोग पहाड़ी क्षेत्रों से दूर नहीं रहते थे। वे मुख्य रूप से पहाड़ी नदियों की घाटियों, चट्टान आश्रयों और*

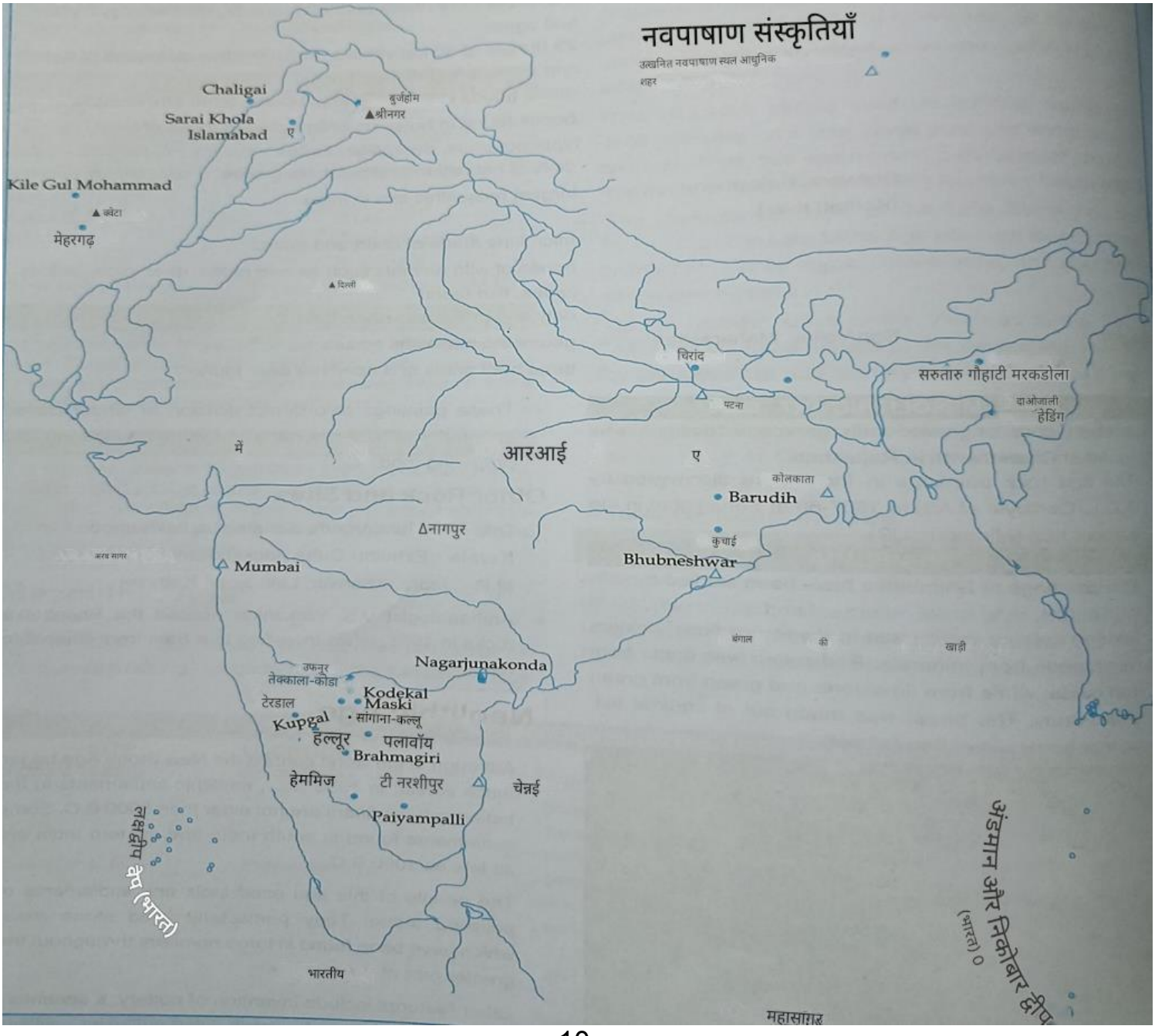

पहाड़ों की ढलानों पर रहते थे, क्योंकि वे पूरी तरह से पत्थर से बने औजारों और हथियारों पर निर्भर थे।

महत्वपूर्ण नवपाषाण स्थल

- **कोलदीहवा और महागढ़ (इलाहाबाद के दक्षिण में स्थित)** – इस स्थल पर गोलाकार झोपड़ियों के साथ-साथ कच्चे हस्तनिर्मित बर्तनों के प्रमाण मिलते हैं। यहाँ चावल के प्रमाण भी मिले हैं, जो न केवल भारत में बल्कि दुनिया में कहीं भी मिले सबसे पुराने चावल के प्रमाण हैं।
- **मेहरगढ़ (बलूचिस्तान, पाकिस्तान)** – यह सबसे पुराना नवपाषाण स्थल है, जहाँ लोग सूर्य से सूखी ईंटों से बने घरों में रहते थे और कपास और गेहूं जैसी फसलों की खेती करते थे।
- **बुर्ज़ाहोम (कश्मीर)** – यहाँ घरेलू कुत्तों को उनके मालिकों के साथ दफनाया गया था; लोग गड्ढों में रहते थे और पॉलिश किए हुए पत्थरों और हड्डियों से बने औजारों का उपयोग करते थे।
- **गुफ़्क्राल (कश्मीर)** – यह नवपाषाण स्थल गड्ढों में रहने, पत्थर के औजारों और घरों में कब्रों के लिए प्रसिद्ध है।
- **चिरंड (बिहार)** – नवपाषाणकाल के लोग हड्डियों से बने औजारों और हथियारों का उपयोग करते थे।
- **पिकलीहाल, ब्रह्मगिरी, मस्की, तकलाकोटा, हल्लूर (कर्नाटक)** – यहाँ के लोग मवेशी पालन करने वाले थे। वे भेड़ और बकरियाँ पालते थे। यहाँ राख के ढेर पाए गए हैं।
- **बेलन घाटी (जो विंध्याचल की उत्तरी पहाड़ियों और नर्मदा घाटी के मध्य भाग में स्थित है)** – यहाँ तीनों चरण, यानी पाषाणकाल, मध्यपाषाणकाल और नवपाषाणकाल की अवस्थाएँ क्रमवार पाई जाती हैं।

3. नवपाषाणकाल (8000 ईसा पूर्व – 4000 ईसा पूर्व)

विकास	• लोग झोपड़ियों में रहते थे, मवेशी पालन करते थे, कृषि (गेहूं, जौ, कपास, चावल आदि) का विकास करते थे, और मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करते थे (हस्तनिर्मित और पहिए से बने)।
औजार	• शिकार के साथ-साथ कृषि के लिए भी तीखे, सममित और पॉलिश किए गए पत्थर के औजारों का उपयोग करते थे।
औजारों के उदाहरण	• खंजर, खोदने की छड़ी, सेल्ट, पीसने का पत्थर, हल, आरी, गुलेल के पत्थर आदि (स्मूद करने के लिए निरंतर रगड़)।
महत्वपूर्ण स्थल	• मेहरगढ़ (पाकिस्तान), बुर्ज़होम, चिरंद, ब्रह्मगिरी, दाओजाली हेडिंग, कोलदीहवा और मस्की आदि।

ताम्रपाषाणकाल (पाषाण-कॉपर युग)

ताम्रपाषाणकाल में धातु का उपयोग शुरू हुआ, साथ ही पत्थर के औजारों का भी उपयोग किया गया। पहला धातु जो इस्तेमाल हुआ, वह ताम्र था। ताम्रपाषाणकाल मुख्य रूप से प्राचीन हड़प्पा संस्कृति से पहले के दौर को दर्शाता है, लेकिन कई जगहों पर यह हड़प्पा संस्कृति के कांस्य काल के बाद भी पाया जाता है।

ताम्रपाषाणकालिक बस्तियाँ

- पहले उपयोग की जाने वाली धातु ताम्र थी, और कई संस्कृतियाँ ताम्र और पत्थर के औजारों के उपयोग पर आधारित थीं। इस प्रकार की संस्कृति को ताम्रपाषाणकालिक कहा जाता है।
- इस युग की शुरुआती बस्तियाँ दक्षिण-पूर्वी राजस्थान, मध्य प्रदेश के पश्चिमी हिस्से, पश्चिमी महाराष्ट्र और पूर्वी भारत में पाई गईं।
- दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में दो प्रमुख स्थल हैं, एक आहड़ और दूसरा गिलुंड, जो बनास घाटी के शुष्क क्षेत्रों में स्थित हैं। पश्चिमी मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में कयाथा और एरण खुदाई में मिले हैं।
- हालांकि, सबसे बड़े खुदाई कार्य पश्चिमी महाराष्ट्र में किए गए हैं। यहाँ कई ताम्रपाषाणकालिक स्थल पाए गए हैं, जैसे जोर्वे, नेवासा, दाइमाबाद (अहमदनगर जिले में), चंदोली, सोंगांव और इनामगांव (पुणे जिले में), और नासिक। ये सभी स्थल नदी के किनारे, बेर और बबूल की वनस्पति वाले शुष्क-आर्द्र क्षेत्रों में स्थित थे। इसके अलावा, नवदटोली (नर्मदा नदी के किनारे) भी एक प्रमुख स्थल है।
- इलाहाबाद क्षेत्र में भी कई ताम्रपाषाणकालिक स्थल मिले हैं, संभवतः यह स्थल विंध्य क्षेत्र के पास होने के कारण थे। पूर्वी भारत में, गंगा के किनारे स्थित चिरंद के अलावा, पश्चिम बंगाल के बर्दवान जिले में पांडु राजार ढिबी और मिदनापुर जिले में महिषदल के स्थल भी उल्लेखनीय हैं।
- **कृषि और पशुपालन** – ताम्रपाषाणकाल के लोग जानवरों को पालते थे और अनाज उगाते थे। उन्होंने गाय, भेड़, बकरियाँ, सूअर और बैल पाले थे और हिरण का शिकार करते थे। यह स्पष्ट नहीं है कि उन्हें घोड़े के बारे में जानकारी थी या नहीं। लोग गोमांस खाते थे, लेकिन सूअर का मांस किसी बड़े पैमाने पर नहीं खाते थे। ताम्रपाषाणकाल के लोग गेहूँ और चावल उगाते थे, साथ ही बाजरा भी उगाते थे। उन्होंने कई प्रकार की दालें भी उगाईं, जैसे मसूर, काले चने, हरे चने, और घास मटर। कपास का उत्पादन दक्षिण भारत के काले बलुआ पत्थर वाली मिट्टी में हुआ, और रागी, बाजरा और अन्य मिलेट्स (दाले) निचले दक्षिण भारत में उगाए जाते थे। पूर्वी क्षेत्र के लोग मुख्य रूप से मछली और चावल खाते थे, जो आज भी उस क्षेत्र में लोकप्रिय आहार हैं।
- **मिट्टी के बर्तन** – ताम्रपाषाणकाल के लोग विभिन्न प्रकार की मिट्टी की चीजों का उपयोग करते थे, जिनमें से एक है काले और लाल रंग की मिट्टी की चीजें, जो उस युग में प्रचलित थीं। लाल-पीली रंग की मिट्टी की चीजें भी लोकप्रिय थीं। मटका घुमाने के पहिए का उपयोग होता था और सफेद रेखाओं से चित्रकारी की जाती थी।

प्रागैतिहासिक काल – ताम्र युग

ताम्र युग:

- यह युग आर्यद्वारक के आगमन से शुरू होता है, जो ऋग्वेदिक काल के साथ जुड़ा है।
- आर्यद्वारक का आगमन: वेदिक काल
- जैन धर्म, बौद्ध धर्म
- महाजनपद: यह सिंधु घाटी सभ्यता के बाद गंगा नदी के किनारे विकसित पहली प्रमुख सभ्यता थी।

भारत में ताम्र युग:

- छोटा नागपुर पठार से लेकर ऊपरी गंगा बेसिन तक फैले हुए एक बड़े क्षेत्र में ताम्र के अवशेषों के रूप में चालीस से अधिक होर्ड्स (संग्रह) पाए गए हैं। इन ताम्र होर्ड्स में सेल्ट्स (कुल्हाड़ी के आकार के औजार), हार्पून्स (फिशिंग औजार), एंटीना, तलवारें और मानव-आकृति वाले मूर्तियों का समावेश है। ये औजार न केवल मछली पकड़ने, शिकार करने और कसने के लिए बनाए गए थे, बल्कि कारीगरी और कृषि के कामों में भी इनका उपयोग होता था। अधिकांश गेरुआ रंग के मिट्टी के बर्तन स्थल दोआब के ऊपरी भाग में पाए जाते हैं, लेकिन तांबे के भंडार न केवल इस क्षेत्र में बल्कि बिहार के पठारी क्षेत्र और पड़ोसी क्षेत्रों में भी पाए जाते हैं। राजस्थान के खेतड़ी क्षेत्र में अनेक कॉपर सेल्ट पाए गए हैं।
- गेरू रंग की मिट्टी के बर्तनों की संस्कृति का काल मोटे तौर पर 2000 ईसा पूर्व के बीच माना जाता है। और 1800 ईसा पूर्व, जब तांबे की वस्तुओं का उपयोग करने वाली गेरू रंग की बस्तियां गायब हो गईं, तो लगभग 1000 ईसा पूर्व दोआब में ज्यादा आबादी नहीं दिखती है।
- तांबे के भंडार वाले लोग हड़प्पावासियों के समकालीन थे, और गेरू रंग के मिट्टी के बर्तनों का क्षेत्र जिसमें वे रहते थे, हड़प्पावासियों के क्षेत्र से अधिक दूर नहीं था।

अध्याय – 3

सिंधु घाटी सभ्यता (आईवीसी) – 3300-1400 ईसा पूर्व

परिचय

- सिंधु घाटी सभ्यता आद्यऐतिहासिक एवं कांस्ययुगीन शहरी सभ्यता थी। 1826 में चार्ल्स मैसन, एक साहसी, हड़प्पा के टीलों पर खड़ा था। कुछ साल बाद, अलेक्जेंडर ब्यूम्स नाम के एक यात्री ने हड़प्पा का दौरा किया, लेकिन उसे इसके महत्व के बारे में पता नहीं था।
- 1850 के दशक में ईस्ट इंडिया कंपनी के एक सैन्य इंजीनियर अलेक्जेंडर कनिंघम ने हड़प्पा का दौरा किया था। उन्होंने एक छोटी सी खुदाई की, लेकिन उन्हें कोई खास सफलता नहीं मिली। जब उन्होंने 1872 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के महानिदेशक के रूप में हड़प्पा का दोबारा दौरा किया, तो उन्होंने पाया कि रेलवे ठेकेदारों ने टीलों को बुरी तरह से छिन्न भिन्न कर दिया था। उन्हें पत्थर के औजार और प्राचीन मिट्टी के बर्तन मिले।
- 1921 में, दया राम साहनी ने हड़प्पा में खुदाई शुरू की और 1922 में आर. डी. बनर्जी ने मोहनजोदड़ो में खुदाई शुरू की। सिंधु या हड़प्पा सभ्यता की खोज की औपचारिक घोषणा 1924 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक जॉन मार्शल द्वारा की गई थी।
- सिंधु घाटी सभ्यता को हड़प्पा संस्कृति भी कहा जाता है। पुरातत्ववेत्ता "संस्कृति" शब्द का उपयोग उन वस्तुओं के समूह के लिए करते हैं, जो एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र और समय के दौरान एक साथ पाई जाती हैं और जिनका विशेष शैली में अंतर होता है। हड़प्पा संस्कृति के मामले में, ये विशिष्ट वस्तुएं सील, मोती, वजन, पत्थर की ब्लेड्स और यहां तक कि पकाई हुई ईंटें थीं। ये वस्तुएं अफगानिस्तान, जम्मू, बलूचिस्तान (पाकिस्तान) और गुजरात जैसे क्षेत्रों से प्राप्त हुईं।
- हड़प्पा के नाम पर, जहां इस अद्वितीय संस्कृति की पहली बार खोज की गई थी, यह सभ्यता लगभग 2600 और 1900 ईसा पूर्व के बीच मानी जाती है। एक ही क्षेत्र में पहले और बाद की संस्कृतियाँ थीं, जिन्हें अक्सर प्रारंभिक हड़प्पा और उत्तर हड़प्पा कहा जाता था। हड़प्पा सभ्यता को इन संस्कृतियों से अलग करने के लिए कभी-कभी परिपक्व हड़प्पा संस्कृति भी कहा जाता है।

(a) प्रारंभिक हड़प्पन चरण (लगभग 3200-2600 ईसा पूर्व): यह एक प्रारंभिक, पूर्व-शहरी चरण था। उदाहरण के लिए, पादरी (गुजरात), धोलावीरा (कच्छ), हड़प्पा (पाकिस्तान), बलाकोट, अमरी और भिर्राना (हरियाणा), कोट डीजी।

(b) परिपक्व हड़प्पन चरण (लगभग 2600-1900 ईसा पूर्व): यह शहरी चरण था, जो सभ्यता का पूर्ण विकसित चरण था। उदाहरण के लिए, हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, चन्हुदड़ो, कालीबंगन।

(c) अंतिम हड़प्पन चरण (लगभग 1900-1300 ईसा पूर्व): यह शहरीकरण के बाद का चरण था, जब शहरों का पतन हुआ। उदाहरण के लिए, कुदवाला (चोलिस्तान), बेट द्वारका (गुजरात), दैमाबाद (महाराष्ट्र) ।

- सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) लगभग 2500 ईसा पूर्व के आसपास पनपी थी, जिसे अक्सर परिपक्व IVC का युग कहा जाता है। यह भारत की रीढ़ की हड्डी के रूप में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दुनिया की प्रमुख सभ्यताओं में से एक है।
- सिंधु घाटी सभ्यता की स्थापना लगभग 3300 ईसा पूर्व हुई थी। यह सभ्यता 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व तक फल-फूल रही थी (परिपक्व सिंधु घाटी सभ्यता)। यह लगभग 1900 ईसा पूर्व से गिरने लगी और लगभग 1400 ईसा पूर्व तक गायब हो गई।
- इसे हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है, क्योंकि इसकी पहली खुदाई हड़प्पा (पंजाब, पाकिस्तान) से की गई थी।
- प्रारंभिक हड़प्पा सभ्यता का प्रमाण पाकिस्तान के मेहरगढ़ में मिला है, जिसमें कपास की खेती के पहले संकेत पाए गए हैं।
- भौगोलिक रूप से, यह सभ्यता पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान, राजस्थान, गुजरात और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में फैली हुई थी। यह पश्चिम में सुतकागेन्गोर (बलूचिस्तान) से लेकर पूर्व में आलमगीरपुर (पश्चिमी उत्तर प्रदेश) तक फैली हुई थी; और उत्तर में मांडू (जम्मू) से लेकर दक्षिण में दैमाबाद (अहमदनगर, महाराष्ट्र) तक विस्तारित थी। कुछ सिंधु घाटी स्थलों के प्रमाण अफगानिस्तान और तुर्कमेनिस्तान तक भी मिले हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल

भारत में सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल:

- कालिबंगन (राजस्थान), लोथल, धोलावीरा, रंगपुर, सूरकोटडा (गुजरात), बनावली (हरियाणा), रोपड़ (पंजाब)।

पाकिस्तान में: हड़प्पा (रावी नदी के किनारे), मोहनजोदड़ो (सिंध में सिंधु नदी के किनारे), चन्हूडरो (सिंध)।

महत्वपूर्ण खोजें और खुदाई:

- सिंधु घाटी सभ्यता की खोज सबसे पहले 1921-22 में सर जॉन ह्यूबर्ट मार्शल के नेतृत्व में हड़प्पा में की गई। यह खुदाई **फ्लिट** द्वारा मोहरों की खोज के बाद शुरू हुई।
- हड़प्पा की खुदाई मार्शल, राय बहादुर दया राम साहनी और मदहो सरूप वट्स ने की थी।
- मोहनजोदड़ो की खुदाई पहली बार आर.डी. बनर्जी, ई. जे. एच. मैकके और मार्शल ने की।

सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ:

- सिंधु घाटी के नगर अन्य समकालीन सभ्यताओं से कहीं अधिक उन्नत और विकसित थे ।
- अधिकांश नगरों में समान संरचनाएँ थीं। इन नगरों में दो भाग होते थे: एक किलेदार भाग और निचला शहर।
- अधिकांश नगरों में 'महान स्नानागार' (Great Bath) था।
- यहाँ अनाज घर, दो मंजिला घर जो जल-पकी ईंटों से बने थे, बंद नालियाँ, उत्तम वर्षा जल और गंदे पानी की निकासी व्यवस्था, माप के लिए वजन, खिलौने, बर्तन आदि पाए गए।
- बड़ी संख्या में मुहरें मिली हैं।
- कृषि मुख्य पेशा था और यह सभ्यता कपास की खेती करने वाली पहली सभ्यता थी।
- पशुपालन जैसे बकरियाँ, भेड़, और सूअर किया जाता था।
- मुख्य फसलें: गेहूं, जौ, कपास, रागी, खजूर, और मटर थीं।
- व्यापार सुमेरियनों से किया जाता था।
- धातु उत्पाद जैसे तांबा, कांस्य, टिन और सीसा बनाए जाते थे। सोना और चांदी भी ज्ञात था, लेकिन लोहे का ज्ञान नहीं था।
- कोई मंदिर या महल जैसी संरचनाएँ नहीं मिलीं।
- लोग पुरुष और महिला देवताओं की पूजा करते थे। 'पशुपति मुहर' की खुदाई की गई है, जिसमें तीन आँखों वाले देवता की आकृति है। मार्शल ने इसे भगवान शिव का प्रारंभिक रूप माना था।
- उत्कृष्ट लाल मिट्टी के बर्तन जो काले रंग में डिजाइन किए गए थे, खुदाई में पाए गए। फाइएन्स का उपयोग गहनों, चूड़ियों, बालियों और बर्तनों बनाने में किया जाता था।
- सभ्यता कला के निर्माण में भी उन्नत थी। मोहनजोदड़ो से 'नृत्य करती लड़की' की एक मूर्ति प्राप्त हुई है, जिसे लगभग 4000 साल पुराना माना जाता है। मोहनजोदड़ो से एक 'दाढ़ी वाले पुजारी-राजा' की मूर्ति भी मिली है।
- लोथल एक बंदरगाह था।
- मृतकों का अंतिम संस्कार लकड़ी के ताबूतों में किया जाता था। बाद में, ह. सिमेट्री संस्कृति में शवों को बर्तनों में जलाया जाता था।
- सिंधु घाटी लिपि अब तक पढ़ी नहीं जा सकी है।

➢ **<u>सिंधु घाटी सभ्यता का पतन:</u>**

- इस सभ्यता के पतन के कारण अब तक स्पष्ट नहीं हो पाए हैं। पुरातत्ववेत्ताओं का मानना है कि यह सभ्यता अचानक समाप्त नहीं हुई थी, बल्कि यह धीरे-धीरे घटती गई। लोग पूर्व की ओर बढ़े और नगरों को छोड़ दिया। लेखन और व्यापार में गिरावट आई।
- मोर्टिमर व्हीलर ने यह सुझाव दिया था कि आर्य आक्रमण के कारण सिंधु घाटी सभ्यता का पतन हुआ। इस सिद्धांत को अब नकारा जा चुका है।
- रॉबर्ट रेक्स ने यह सुझाव दिया कि भूगर्भीय हलचल और बाढ़ों के कारण पतन हुआ।
- अन्य कारणों में नदियों का सूखना, जंगलों की कटाई, और हरे-भरे क्षेत्र का नष्ट होना शामिल हैं। यह संभव है कि कुछ नगर बाढ़ से नष्ट हो गए हों, लेकिन सभी नहीं। अब यह स्वीकार किया गया है कि सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के कारण कई थे।
- नए नगरों का उदय लगभग 1400 साल बाद हुआ।

<u>सिंधु घाटी सभ्यता - प्रमुख स्थल</u>

सिंधु घाटी सभ्यता क्या है ?

सिंधु घाटी सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है और यह अपनी सुव्यवस्थित योजना और ग्रिड प्रणाली के लिए प्रसिद्ध है।

यह सभ्यता कांस्य युग की सभ्यता है जो आज के पूर्वी अफगानिस्तान से लेकर पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिम भारत तक फैली हुई थी। यह सभ्यता सिंधु और घग्गर-हाकरा नदियों के घाटियों में फली-फूली थी।

सिंधु घाटी सभ्यता के सात महत्वपूर्ण शहर हैं:

1. मोहनजोदड़ो
2. हड़प्पा
3. कालिबंगन
4. लोथल
5. चन्हूदरो
6. धोलावीरा
7. बनावली

सुरकोटडा, लोथल और धोलावीरा सिंधु घाटी के महत्वपूर्ण बंदरगाह नगर हैं । हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, बनावली और धोलावीरा को मुख्य चार हड़प्पा स्थल माना जाता है। 1999 तक 1,056 से अधिक शहरी क्षेत्र और बस्तियाँ पाई गई थीं। इनमें से 96 स्थलों की खुदाई की गई है, जो मुख्य रूप से सिंधु और घग्गर-हाकरा नदियों और उनकी सहायक नदियों के क्षेत्र में स्थित हैं। इन बस्तियों में सबसे महत्वपूर्ण शहरी केंद्र थे - हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, गणवीरा, धोलावीरा और राखीगढ़ी।

<u>सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल:</u>

यहां हम सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थलों की सूची दे रहे हैं, जिनमें उनका स्थान और प्रमुख खोजें शामिल हैं

सिंधु घाटी सभ्यता - प्रमुख स्थल और उनकी खुदाई

वर्ष	स्थल	स्थान	खुदाईकर्ता	प्रमुख खोजें
1921	हड़प्पा	साहिवाल जिला, पंजाब, रावी नदी के किनारे	दया राम साहनी	• सिंधु लिपि वाली मिट्टी के बर्तन का टुकड़ा • घनाकार चूना पत्थर का वजन • फाइंस स्लैग

				• मानव शरीर रचना की बालू पत्थर की मूर्तियाँ • ताम्र बैलगाड़ी • अनाज गोदाम • ताबूत में दफनाए गए शव (केवल हड़प्पा में पाया गया) • मूर्तियाँ (टेरेकोटा)
1922	मोहनजोदड़ो	लारकाना जिला, सिंध, सिंधु नदी के किनारे	आर. डी. बनर्जी	• महान स्नानगृह (Great Bath) • अनाज गोदाम • एक सींग सील (यहां सबसे अधिक) • कांस्य नृत्य करती लड़की की मूर्ति • एक आदमी की सील जिसमें हिरण, हाथी, बाघ और गैंडा हैं - इसे पशुपति सील माना जाता है • बाल वाले आदमी की स्टियाटाइट मूर्ति • कांस्य भैंस
1931	चन्हुदड़ो	लान सांधा, सिंध, सिंधु नदी के किनारे	एन. जी. मजूमदार	• चूड़ी बनाने की फैक्ट्री • स्याही की मूठी • मोती बनाने की दुकान • कुत्ते के पंजे का निशान, जो बिल्ली का पीछा कर रहा है • गाड़ी जिसमें बैठा हुआ चालक है **नोट:** यह अकेला नगर है जिसमें किले का भाग नहीं था।
1935	अमरी	बलूचिस्तान के पास, सिंधु नदी के किनारे	एन. जी. मजूमदार	• एंटेलोपे (हरिण) के प्रमाण • गैंडे के प्रमाण
1953	कालिबंगन	हनुमानगढ़ जिला, राजस्थान, घग्गर नदी के किनारे	अमलानंद घोष	• निचला किला नगर • लकड़ी की जल निकासी व्यवस्था • ताम्र बैल • भूकंप के प्रमाण • लकड़ी का हल • ऊंट की हड्डियाँ • अग्नि वेदी • हल की रेखाएँ
1953	लोथल	गुजरात, भोगवा नदी के पास, कंबे खाड़ी के नजदीक	आर. राव	• बंदरगाह नगर , कब्रिस्तान • हाथी दांत का वजन • ताम्र कुत्ता • पहला मानव निर्मित बंदरगाह • डॉकीर्ड (जहाज बनाने का स्थान) • चावल के भूसे के निशान • अग्नि वेदी , शतरंज खेलने का निशान
1964	सुरकोटड़ा	गुजरात	जे. पी. जोशी	
1974	बनावली	फतेहाबाद जिला, हरियाणा	आर. एस. बिष्ट	• मोती • जौ • अंडाकार आकार की बस्ती • केवल शहर जिसमें रेडियल (त्रिज्यीय) सड़कें हैं • खिलौना हल • सबसे अधिक जौ के दाने
1985	धोलावीरा	गुजरात, कच्छ के रण में	आर. एस. बिष्ट	• विशेष जल प्रबंधन प्रणाली • केवल स्थल जिसे तीन भागों में विभाजित किया गया है • विशाल जलाशय

4. इसलिए, इन गाँवों की जीवनशैली और संस्कृति का पता लगाना मुश्किल है, क्योंकि समय के साथ ये बिना किसी निशान के नष्ट हो गए।
5. सिंधु घाटी सभ्यता एक अत्यधिक उन्नत सभ्यता थी, जिसमें जीवन जीने का बहुत सुव्यवस्थित तरीका था।
6. यद्यपि यह सभ्यता घनी आबादी वाली थी, इसके शहरों में कोई अराजकता नहीं थी, जबकि समकालीन मेसोपोटामिया या मिस्र के शहरों में ऐसा देखा गया था।
7. मोहनजोदड़ो, जो लगभग 300 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला था, सबसे बड़ा शहर था।
8. मोहनजोदड़ो की जनसंख्या लगभग 40,000 हो सकती थी।
9. अल्लाहदीनो सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे छोटा स्थल था।

सिंधु घाटी सभ्यता के जल निकासी प्रणाली के बारे में 5 तथ्य

1. सिंधु घाटी सभ्यता में उन्नत स्वच्छता प्रणाली थी।
2. सिंधु घाटी सभ्यता के लोग जल चैनलिंग और अपशिष्ट जल के निपटान के बारे में जानते थे और इसे किसी अन्य प्राचीन सभ्यता से पहले लागू किया था।
3. रोमनों ने भी हजारों साल बाद जलवाहिकाएँ (एक्वाडक्ट्स) बनाई।
4. उनकी जल प्रबंधन प्रणाली इतनी उन्नत थी कि उन्होंने हड़प्पा की सड़कों के किनारे अपशिष्ट जल और वर्षा के पानी के लिए अलग-अलग चैनल बनाए थे।
5. अपशिष्ट जल की नालियाँ भूमिगत थीं और इन्हें साफ करने के लिए मिट्टी के ढक्कन लगाए गए थे।

सिंधु घाटी सभ्यता के नगर नियोजन के बारे में 16 तथ्य

1. सिंधु घाटी सभ्यता में दुनिया के पहले योजनाबद्ध शहर पाए गए थे।
2. सभ्यता के शहरों का नियोजन ग्रिड पद्धति में था, जिसमें सड़कें समकोण पर एक-दूसरे को काटती थीं।
3. ये शहरी नियोजन के अद्भुत उदाहरण हजारों साल पहले के थे, जो मिलेटस (दाले) के हिप्पोडामस (जिन्हें यूरोपीय शहरी नियोजन का 'पिता' माना जाता है) के समय से कहीं पहले के थे।
4. सिंधु घाटी के शहरों और कस्बों में आयताकार ग्रिड पैटर्न था।
5. मुख्य सड़कें उत्तर-दक्षिण दिशा में और सहायक सड़कें पूर्व-पश्चिम दिशा में थीं।
6. सड़कें समकोण पर आपस में मिलती थीं। माना जाता है कि यह सटीक पैटर्न धार्मिक या खगोलशास्त्रीय विश्वासों के कारण था।
7. हड़प्पा के शहरों और कस्बों का नियोजन सिर्फ उत्कृष्ट था, बल्कि उनकी जल निकासी प्रणाली भी बेहतरीन थी, और वे मानकीकृत थे।
8. खुदाई में मिले लगभग सभी स्थानों की संरचना और पैटर्न एक जैसा था।
9. यहां तक कि घरों की ईंटें भी एक जैसी माप की थीं!
10. मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में पाई गई सड़कें 10.5 मीटर तक चौड़ी थीं।
11. छोटी सड़कें कम से कम 1.5 मीटर चौड़ी थीं।
12. पुरातत्ववेत्ताओं का मानना है कि चौड़ी सड़कें बाजार गतिविधियों को इंगीत करती हैं।
13. हड़प्पा की सड़कों को जलवायु की आसान आवाजाही के लिए जलाए गए ईंटों से पक्का किया गया था।
14. सिंधु घाटी सभ्यता के शहरों में जल निकासी के लिए सड़क के किनारे नालियाँ बनी थीं।
15. सिंधु घाटी सभ्यता के शहरों को अलग-अलग मोहल्लों में बांटा जा सकता था।
16. प्रत्येक मोहल्ले में लोग एक विशेष पेशे में लगे हुए थे।

सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे पुराने साइनबोर्ड के बारे में 3 तथ्य

1. 1999 में धोलावीरा में एक लकड़ी के फ्रेम में 30 सेंटीमीटर ऊंचाई वाले पत्थर के प्रतीक/अक्षर वाला बोर्ड पाया गया था।
2. पुरातत्ववेत्ताओं का मानना है कि यह दुनिया का पहला साइनबोर्ड था!
3. यह माना जाता है कि इसे शहर के किले के उत्तर द्वार के सामने रखा गया था।

सिंधु घाटी सभ्यता में स्वच्छता और सफाई के बारे में 3 प्रमुख तथ्य

तथ्य 1: स्वच्छता थी सबसे बड़ी प्राथमिकता

1. सिंधु घाटी सभ्यता के लोग बहुत स्वच्छ, स्वच्छ और स्वस्थ जीवन जीते थे। खुदाई से इस तथ्य का पता चलता है।
2. कई सार्वजनिक स्नानघर, उत्कृष्ट जल प्रबंधन प्रणाली, प्रत्येक घर में बहता हुआ पानी, साफ-सुथरी जल निकासी प्रणालियाँ और भूमिगत अपशिष्ट जल प्रणाली सभी इस बात का संकेत देती हैं कि हड़प्पा की सभ्यता में स्वच्छता को बहुत महत्व दिया गया था।

तथ्य 2: सड़कों पर कूड़ेदान

1. प्राचीन समय में भी सिंधु घाटी सभ्यता अपने समय से बहुत आगे थी, खासकर नागरिक भावना के मामले में।
2. मोहनजोदड़ो में सड़कों के किनारे कूड़ेदान रखे गए थे!
3. ये कूड़ेदान ईंटों के बने कंटेनर थे, खासकर कूड़ा डालने के लिए।

तथ्य 3: हर शहर में एक बड़ा स्नानघर

1. सभ्यता के हर शहर में कम से कम एक 'ग्रेट बाथ' (महान स्नानघर) था।
2. माना जाता है कि इसका धार्मिक उद्देश्य भी हो सकता था।

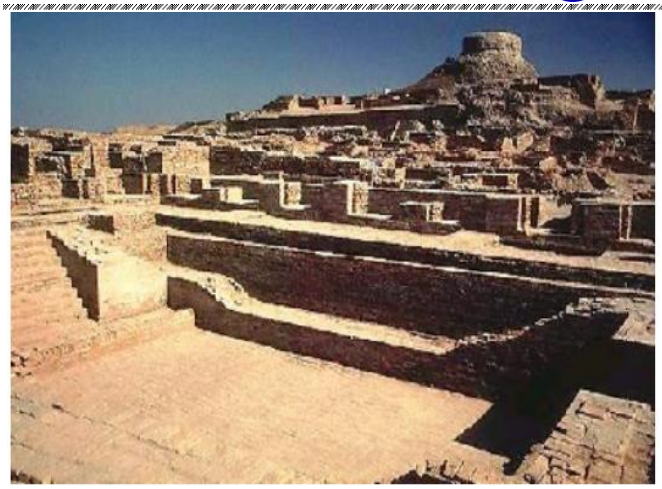

सिंधु घाटी सभ्यता में धर्म के बारे में 6 प्रमुख तथ्य

1. **मातृदेवी या शक्ति को पूजा जाता था**
- मातृदेवी या शक्ति को सिंधु घाटी सभ्यता में प्रमुख देवी के रूप में पूजा जाता था।

2. **योनि पूजा और प्रकृति पूजा का प्रचलन था**
- योनि पूजा और प्रकृति पूजा का अभ्यास सिंधु घाटी सभ्यता में होता था।

3. **वे पीपल के पेड़ की पूजा करते थे**
- पीपल के पेड़ को भी पूजा जाता था, जिसे धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता था।

4. **वे अग्नि की पूजा करते थे, जिसे हवन कुंड कहा जाता था**
- अग्नि पूजा का एक रूप हवन कुंड था, जो धार्मिक अनुष्ठानों का हिस्सा था।

5. **पशुपति महादेव को पशुओं का स्वामी माना जाता था**
- पशुपति महादेव को 'पशुओं का स्वामी' माना जाता था और उनकी पूजा होती थी।

6. **सिंधु घाटी के लोग पशु पूजा करते थे, जैसे यूनिकॉर्न और बैल की पूजा**
- यूनिकॉर्न और बैल जैसे पशुओं की पूजा भी की जाती थी, जो धार्मिक प्रतीक माने जाते थे।

सिंधु घाटी सभ्यता में कोई मंदिर नहीं थे

1. पुरातत्वविदों को सिंधु घाटी सभ्यता में कोई ऐसा ढांचा नहीं मिला है जो मंदिर, महल या कोई अन्य स्मारक जैसा हो।
2. वास्तव में, अन्य समकालीन सभ्यताओं में कुछ केंद्रीय स्मारक पाए जाते हैं।
3. अनाज भंडारों और सार्वजनिक स्नानघरों जैसी संरचनाओं के बावजूद महल या मंदिर का अभाव यह संकेत देता है कि सिंधु घाटी समाज समानतावादी था।

सिंधु घाटी सभ्यता के 10 प्रमुख आर्थिक तथ्य

1. सिंधु घाटी सभ्यता का आधार कृषि था।
2. इस समय के दौरान व्यापार और वाणिज्य का प्रचलन था।
3. मेसोपोटामियाई (सुमेरियन) लेखक मध्य कांस्य युग में एक स्थान का उल्लेख करते हैं जिसे वे मेलुहा कहते थे। मेलुहा सुमेरियनों का प्रमुख व्यापारिक साझीदार था और वे उच्च मात्रा में लकड़ी और एबनी (आबनूस) आयात करते थे।
4. तिल का तेल और लक्ज़री सामान जैसे लैपिस लाजुली भी मेलुहा से आयात किए जाते थे, जो शायद सिंधु घाटी सभ्यता ही थी।
5. लोथल में एक डॉकयार्ड पाया गया है।
6. निर्यात और आयात होते थे।
7. कपास का उत्पादन होता था।
8. 16 इकाई मापने का मानक था।
9. हड़प्पन संस्कृति में वजन और माप का प्रयोग था, और यह लोथल में पाया गया था।
10. वजन पत्थर, स्टीएटाइट आदि से बने होते थे और सामान्यतः घनाकार होते थे।

सिंधु घाटी सभ्यता थी दुनिया की पहली कपास उगाने वाली सभ्यता

1. दुनिया में कपास के सबसे पुराने अवशेष यहां पाए गए थे। कपास के उपयोग का सबसे पुराना प्रमाण मेहरगढ़ में पाया गया है, जो छठी सहस्त्राब्दी ई.पू. का है।
2. सिंधु घाटी के किसान सबसे पहले कपास को कातने और बुनने वाले थे।
3. कपास सिंधु घाटी सभ्यता का एक प्रमुख निर्यात उत्पाद था।

सिंधु घाटी सभ्यता का अन्य सभ्यताओं के साथ बड़े पैमाने पर समुद्री व्यापार संबंध था

1. कई बंदरगाह शहरों की खुदाई की गई है, जो यह प्रमाणित करते हैं कि सिंधु घाटी सभ्यता का अन्य सभ्यताओं के साथ बड़े पैमाने पर समुद्री व्यापार था।
2. लोथल दुनिया का पहला डॉकयार्ड हो सकता है।
3. अन्य बंदरगाहों में अल्लाहदीनो, सुत्कागेन्दोर और बालकोट शामिल हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता में दुनिया के पहले बटन पाए गए थे

1. दुनिया के पहले बटन सिंधु घाटी सभ्यता में पाए गए थे, जो 2800 – 2600 ई.पू. के बीच के हैं।
2. बटन सीपियों से बनाए गए थे, और उनमें से कुछ में धागे से कपड़ों में जोड़ने के लिए छेद किए गए थे।

4. मोहनजो-दारो शहर में भी एक विशाल जल प्रबंधन प्रणाली थी, जिसमें 80 सार्वजनिक शौचालय और लगभग 700 कुएं थे।
5. कुएं इस तरह से बनाए गए थे कि हर क्षेत्र को पानी की आपूर्ति की जा सके।

सिंधु नदी घाटी सभ्यता में धातु विज्ञान के 7 प्रमुख उन्नति तथ्य

1. **धातु उत्पादों का उत्पादन**
   वे धातु के उत्पाद बनाते थे, जिसमें सीसा, तांबा, कांसा और टिन शामिल थे।
2. **उत्पादों का निर्यात**
   इन उत्पादों का वे निर्यात भी करते थे।
3. **धातु शोधन की तकनीक**
   वे तांबे को अन्य धातुओं के साथ गलाने (स्मेल्टिंग) की तकनीक को जानते थे।
4. **सोने की गहनों की खुदाई**
   लोथल से 0.25 मिमी से भी छोटी गोल्ड की चूड़ियां खुदाई में मिली हैं। अन्य धातु के सामान मोहनजो-दारो, हड़प्पा और रंगपुर में पाए गए हैं।
5. **तांबे के औजारों का निर्माण**
   हड़प्पा में तांबे के औजारों का निर्माण कास्टिंग विधि द्वारा किया जाता था।
6. **कांसे के बर्तन**
   कांसे के बर्तन एकल शीट से बनाए जाते थे, जिसे हथौड़े से पीटा जाता था।
7. **धातु मिश्रण तकनीक**
   धातु मिश्रण (ऑलॉयिंग) की तकनीक सिंधु नदी घाटी सभ्यता में अच्छी तरह से विकसित थी।

सोने की शुद्धता की जाँच की तकनीक

1. **स्पर्श पत्थर की खोज**
   बनवाली, हरियाणा से एक स्पर्श पत्थर पाया गया है।
2. **सोने की शुद्धता जांचने के संकेत**
   इस स्पर्श पत्थर पर सोने के निशान हैं, जो यह दर्शाते हैं कि इसका उपयोग सोने की शुद्धता की जाँच करने के लिए किया जाता था।
3. **आज भी उपयोग में है यह तकनीक**
   यह तकनीक आज भी देश के कुछ हिस्सों में उपयोग की जाती है।

सिंधु नदी घाटी सभ्यता में सटीक माप प्रणालियाँ - 4 तथ्य

1. **पत्थर के घन**
   इस सभ्यता के स्थलों से पत्थर के घन खुदाई में मिले हैं। पुरातत्ववेत्ताओं का मानना है कि ये माप के लिए वजन के रूप में उपयोग किए जाते थे।
2. **वजन का अनुपात**
   इन वजन का अनुपात 5:2:1 के हिसाब से बढ़ता है। इनके वजन 0.05, 0.1, 0.2, 0.5, 1, 2, 5, 10, 20, 50, 100, 200 और 500 इकाइयाँ थे।
3. **माप प्रणाली का स्वदेशी विकास**
   यह माप प्रणाली मिस्र और मेसोपोटामिया की माप प्रणाली से अलग थी, इसलिए यह कहा जा सकता है कि यह प्रणाली स्वदेशी रूप से विकसित की गई थी।
4. **हड्डी की मापने की पट्टी पर सबसे छोटी श्रेणी**
   लोथल, गुजरात में हड्डी की एक मापने की पट्टी मिली थी, जिसमें सबसे छोटी श्रेणी 1.704 मिमी की थी। यह कांस्य युग से मिली सबसे छोटी श्रेणी है।

सिंधु नदी घाटी सभ्यता के 9 सामान्य तथ्य

तथ्य 1: सबसे पुरानी सिंधु नदी घाटी बस्ती 7000 ई.पू. के आसपास स्थापित हुई थी

1. Mehrgarh (मेहरगढ़) सबसे पुरानी बस्ती है, जो लगभग 7000 ई.पू. की है।

2. यह प्राचीन हड़प्पा काल से पहले की बस्ती थी।
3. मेहरगढ़ एक कृषि आधारित गाँव था।

तथ्य 2: 4000 से अधिक मुहरें मिलीं

1. इन मुहरों में छोटे-छोटे आयताकार पत्थर के स्लैब होते थे, जिन पर लिपि अंकित होती थी।
2. इन मुहरों पर जानवरों और अन्य चित्र भी पाए गए हैं।
3. इन मुहरों का उपयोग अभी तक निश्चित नहीं किया जा सका है।

तथ्य 3: मोहनजो-दारो को कम से कम 9 बार बनाया गया था

1. इस सभ्यता के कई शहरों को बाढ़, कीचड़ जमा होने आदि के कारण कई बार नष्ट किया गया था।
2. हर बार इन्हें फिर से बनाया गया।
3. दिलचस्प बात यह है कि हर बार जब इन शहरों का पुनर्निर्माण हुआ, तो उन्होंने वही ग्रिड पैटर्न अपनाया।
4. मोहनजो-दारो को नौ बार पुनर्निर्मित किया गया था और हर बार पहले से बने ग्रिड के ऊपर।
5. यह उनके शहरी नियोजन की उन्नति को दर्शाता है।

तथ्य 4: सिंधु नदी घाटी सभ्यता में दंत चिकित्सक भी थे

1. 2006 में, 'नेचर' पत्रिका ने यह घोषणा की कि मेहरगढ़ में पहली बार जीवित व्यक्ति के दांतों में छेद करने के प्रमाण मिले।
2. यह खोज 2001 में की गई थी, जब मेहरगढ़ के एक नियोलीथिक कब्र से ग्यारह दांतों के मुकुट मिले थे, जो 5500 ई.पू. और 7000 ई.पू. के बीच के थे।
3. यह महत्वपूर्ण खोज यह दर्शाती है कि सिंधु नदी घाटी सभ्यता के लोग प्रोटो-दंत चिकित्सा (प्रारंभिक दंत चिकित्सा) के ज्ञान से परिचित थे।

तथ्य 5: सिंधु नदी घाटी की लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है

1. इस सभ्यता के बारे में हम ज्यादा नहीं जानते, क्योंकि उनकी लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
2. लगभग 400 विभिन्न प्रतीकों को वस्तुओं पर अंकित पाया गया है।
3. ये प्रतीक 3 से 20 के बीच की लंबाई में होते हैं।
4. इतिहासकारों का मानना है कि ये प्रतीक शायद नाम होते हैं और इनका अन्य कोई अर्थ नहीं है।

तथ्य 6: किसी राजा या शासक का चित्रण नहीं मिला

1. हड़प्पा सभ्यता में संगठित जीवन के बावजूद, किसी राजा या शासक के चित्रण या शासन प्रणाली का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
2. केंद्रीय व्यक्ति के रूप में सबसे निकटतम चित्रण एक टेराकोटा मूर्ति का है, जिसे एक पुजारी-राजा का माना जाता है।

तथ्य 7: युद्ध का कोई प्रमाण नहीं मिला

1. हालांकि कुछ हथियार जैसे भाले, चाकू और बाण के सिर खुदाई में मिले हैं, लेकिन सिंधु नदी घाटी सभ्यता से युद्ध का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
2. यह निष्कर्ष निकाला गया है कि वे सामान्यतः शांतिप्रिय लोग थे।
3. यह भी संभव है कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उनके पास कोई प्राकृतिक शत्रु नहीं थे और अन्य बस्तियों के साथ उनके अच्छे व्यापारिक संबंध थे।

तथ्य 8: गिरावट का कारण: अज्ञात

1. इतिहासकार यह निश्चित नहीं हैं कि सिंधु नदी घाटी सभ्यता के पतन का कारण क्या था।
2. विशेषज्ञ अब यह मानते हैं कि उनके पतन का कारण आक्रमण, महामारी या कोई अन्य आपदा नहीं थी।
3. शहर और बस्तियाँ धीरे-धीरे गिरने लगीं और ऐसा प्रतीत होता है कि इन बस्तियों को छोड़ दिया गया था, और लोग कहीं और बेहतर जगहों पर प्रवास कर गए थे।
4. यह विश्वास किया जाता है कि सरस्वती नदी का धीरे-धीरे सूखना इसके पीछे का कारण हो सकता है।
5. यह सभ्यता अचानक समाप्त नहीं हुई, बल्कि धीरे-धीरे घटित हुई और अन्य संस्कृतियों में समाहित हो गई।

तथ्य 9: ब्रिटिशों ने सिंधु नदी घाटी सभ्यता के खुदाई स्थलों से मिली सामग्री का कैसे उपयोग किया?

1. 1856 में, जब ब्रिटिशों ने कराची से लाहौर तक पूर्व भारतीय रेलवे कंपनी की रेल लाइन बिछाई, तो उन्हें ईंटों की कमी का सामना करना पड़ा।
2. ब्रिटिशों ने पास के हड़प्पा गांवों से 4000 साल पुरानी ईंटों का इस्तेमाल किया, जहाँ एक 'नष्ट शहर' से ईंटें मिली थीं, और उन्होंने इन ईंटों से 93 मील (150 किमी) रेलवे ट्रैक बिछाया।

अध्याय – 10

गुप्त साम्राज्य

प्राचीन भारत में, गुप्त वंश ने तीसरी शताब्दी के मध्य से लेकर 543 ई. तक शासन किया। श्री गुप्त द्वारा स्थापित, यह वंश चंद्रगुप्त-I, समुद्रगुप्त जैसे शासकों के साथ प्रसिद्ध हुआ।

गुप्त साम्राज्य की अवधि को "भारत का स्वर्ण युग" के रूप में जाना जाता है। यह विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी, कला, साहित्य, तर्कशास्त्र, गणित, खगोलशास्त्र, धर्म और दर्शन में व्यापक अनुसंधान और विकास के कारण था, जिसने हिंदू संस्कृति के तत्वों को उजागर किया। गुप्तों के तहत समृद्धि ने कला और विज्ञान में शानदार उपलब्धियों का एक युग शुरू किया। गुप्त साम्राज्य 320 ई. से लेकर 550 ई. तक चला।

❖ गुप्त साम्राज्य की उत्पत्ति

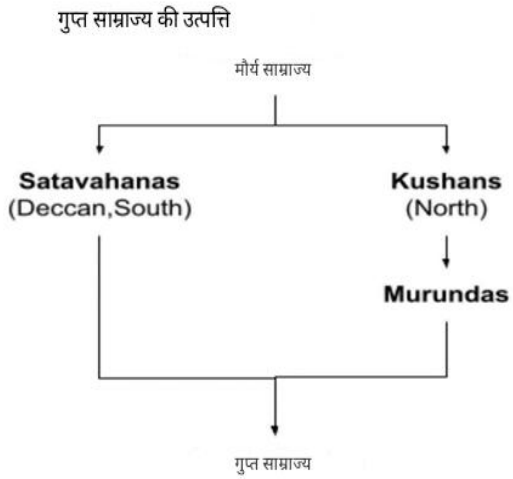

मौर्य साम्राज्य का पतन होने के बाद उत्तर और दक्षिण में क्रमशः दो प्रमुख राजनीतिक शक्तियों – कुषाणों और सातवाहनों का उदय हुआ। इन दोनों साम्राज्यों ने अपने-अपने क्षेत्रों में राजनीतिक एकता और आर्थिक विकास

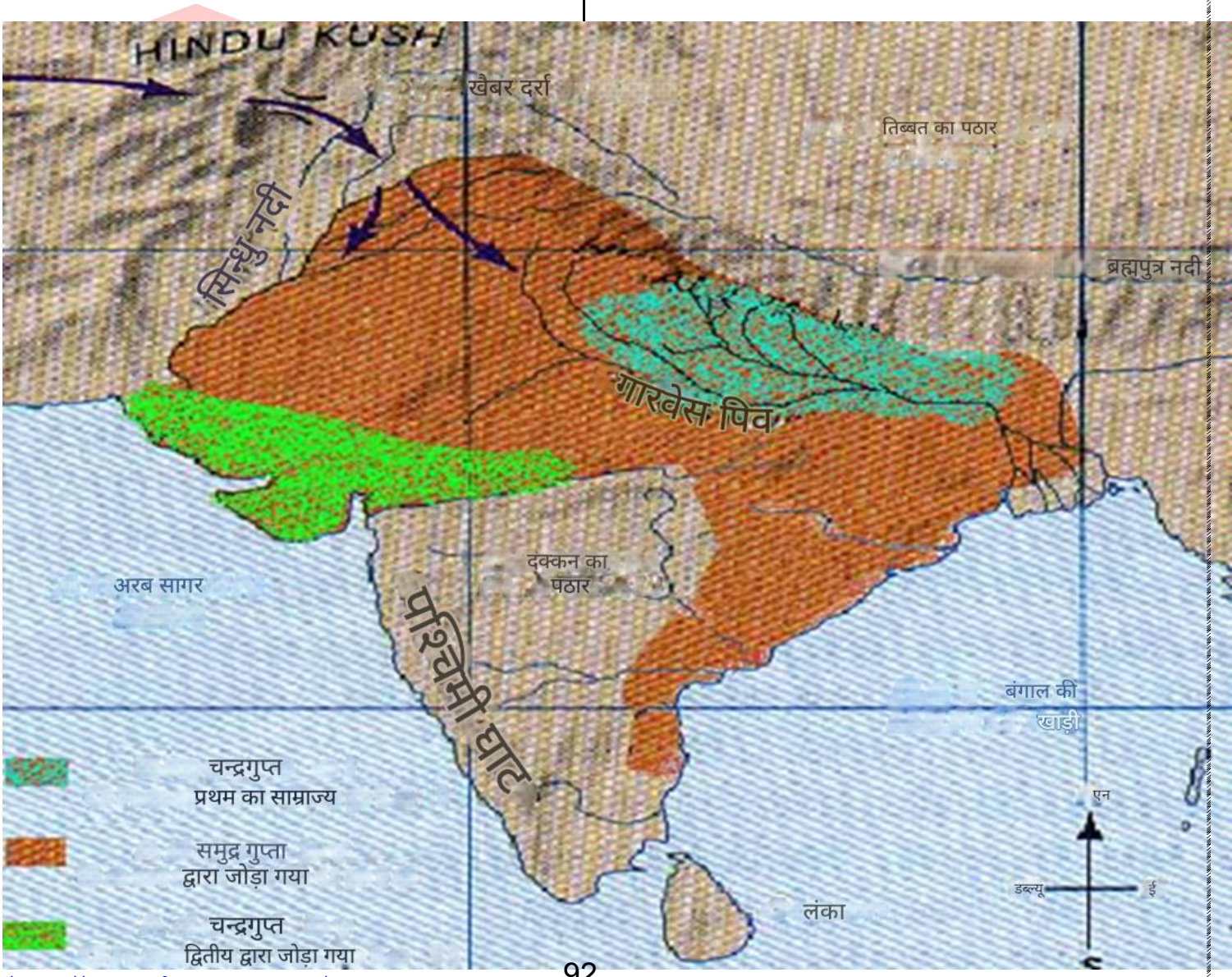

लाया। उत्तर भारत में कुषाणों का शासन लगभग 230 ई. के आसपास समाप्त हो गया और फिर मध्य भारत का एक अच्छा हिस्सा मुरुंडों के अधीन आ गया (जो संभवतः कुषाणों के रिश्तेदार थे)।

मुरुंडों का शासन केवल 25 – 30 वर्षों तक चला। तीसरी शताब्दी के अंतिम दशक (लगभग 275 ई.) में गुप्त वंश का उत्थान हुआ। गुप्त साम्राज्य ने कुषाणों और सातवाहनों दोनों के पूर्ववर्ती क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित किया।

गुप्त (संभवतः वैश्य) वंश ने उत्तर भारत को एक सदी से अधिक समय तक राजनीतिक रूप से एकजुट रखा (335 ई. - 455 ई.)।

- गुप्तों को कुषाणों के सामंत माना जाता है।
- गुप्तों का मूल राज्य उत्तर प्रदेश और बिहार था, जिसका शक्ति केंद्र प्रयाग (उत्तर प्रदेश) था।
- गुप्तों ने मध्यदेशा (जिसे अनुगंगा भी कहा जाता है), साकेत (उत्तर प्रदेश अयोध्या), प्रयाग (उत्तर प्रदेश) और मगध (मुख्य रूप से बिहार) के उपजाऊ मैदानों पर शासन स्थापित किया।
- गुप्तों ने मध्य भारत और दक्षिण बिहार में लौह अयस्क के भंडार का अच्छे से उपयोग किया और उत्तर भारत के उन क्षेत्रों के समीपता का भी लाभ उठाया, जो बाइजेंटाइन साम्राज्य (पूर्वी रोमन साम्राज्य) से रेशम व्यापार करते थे।
- प्राचीन भारत में गुप्त काल को "स्वर्ण युग" कहा जाता है क्योंकि इस अवधि में कला, साहित्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कई उपलब्धियां हासिल की गईं। इसने उपमहाद्वीप की राजनीतिक एकता भी लाई।

<u>गुप्त साम्राज्य की शुरुआत</u>

- गुप्त साम्राज्य की स्थापना श्री गुप्त ने की थी। इसके बाद घातोत्कच ने शासन किया।
- वे लगभग 275 ईस्वी में सत्ता में आए।

- गुप्त साम्राज्य 320 ईस्वी के आसपास मगध में प्रमुखता से उभरा और उत्तरी भारत के बड़े हिस्से और दक्षिणी भारत के छोटे हिस्सों को कवर किया।
- उन्होंने लगभग 200 वर्षों से अधिक समय तक शासन किया।
- गुप्त परिवार की पूर्वज भूमि निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है। लेकिन उनका मूल बंगाल से हो सकता है। कुछ शोधकर्ता दावा करते हैं कि वे प्रयाग (उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद) से आते हैं।
- यह माना जाता है कि वे या तो ब्राह्मण हैं या वैश्य हैं।

<u>गुप्त साम्राज्य के भौतिक लाभ</u>

- मध्यदेश की उपजाऊ भूमि, जिसमें बिहार और उत्तर प्रदेश शामिल थे, उनका संचालन केंद्र था।

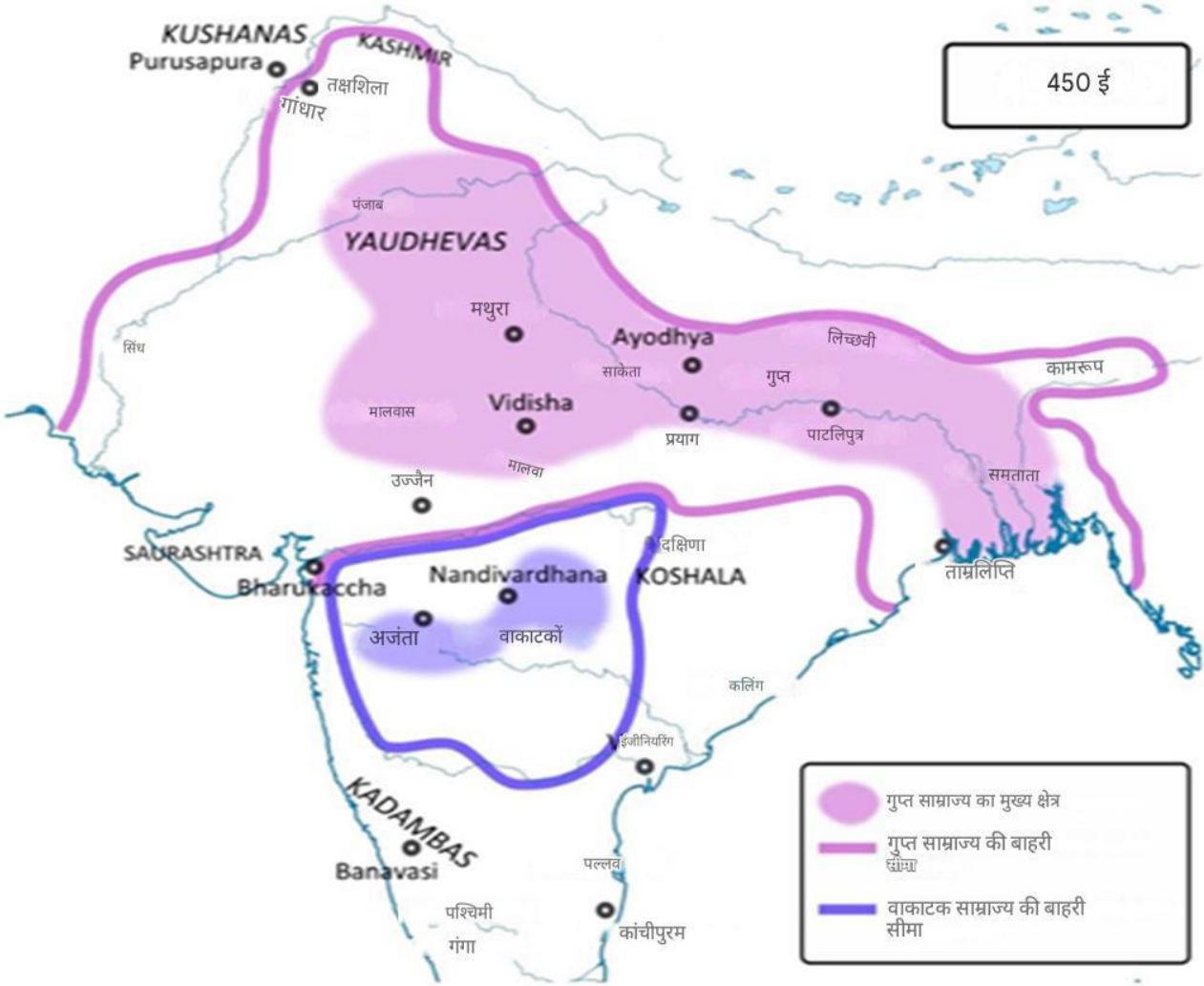

- मध्य भारत और दक्षिण बिहार के लौह अयस्क भंडारों का संभवतः उन्होंने दोहन किया।
- उत्तर भारत के क्षेत्रों की निकटता का उन्होंने लाभ उठाया और पूर्वी रोमन साम्राज्य (बीजान्टिन साम्राज्य) के साथ रेशम का व्यापार किया।
- गुप्त साम्राज्य में मूल रूप से उत्तर प्रदेश और बिहार शामिल थे। हालाँकि उत्तर प्रदेश उनका संचालन स्थल प्रतीत होता है जिसका शक्ति केंद्र प्रयाग में था। इन अनुकूल कारकों के कारण, गुप्तों ने अनुगंगा (मध्य गंगा बेसिन), मगध, साकेत (अयोध्या, यूपी) और प्रयाग (आधुनिक इलाहाबाद) पर अपना शासन स्थापित किया।

गुप्त साम्राज्य का कालक्रम

श्री गुप्त से शुरू होकर, 200 वर्षों की अवधि में गुप्त साम्राज्य स्कंदगुप्त के शासनकाल तक अपनी प्रमुखता तक पहुंच गया, जिसके बाद गुप्त वंश के कमजोर शासकों ने शासन किया और अंततः साम्राज्य के पतन का कारण बना।

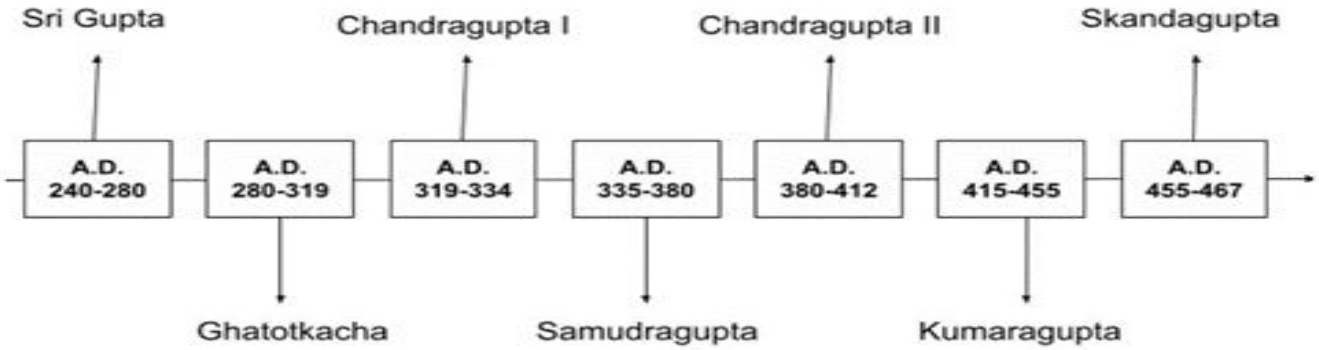

गुप्त साम्राज्य – शासक

गुप्त वंश के शासकों के बारे में संक्षिप्त जानकारी नीचे दी गई तालिका में दी गई है।

गुप्त वंश के शासक	गुप्त सम्राटों के बारे में तथ्य
श्री गुप्त	• गुप्त वंश के संस्थापक, 240 से 280 ई. तक शासन किया, 'महाराजा' की उपाधि धारण की
घातोत्कच	• 319 से 335/336 ई. तक शासन किया, गुप्त संवत की शुरुआत, 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की, लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया
समुद्रगुप्त	• 335/336 ई. से 375 ई. तक शासन किया, 'भारत का नेपोलियन' कहा जाता था, उसके अभियान एरण शिलालेख (मध्य प्रदेश) में उल्लेखित हैं
चंद्रगुप्त द्वितीय	• 376-413/415 ई. तक शासन किया, नवरत्न (अपने दरबार में 9 रत्न), 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की
कुमारगुप्त प्रथम	• 415 ई. से 455 ई. तक शासन किया, नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की, उन्हें शकरादित्य भी कहा जाता था
स्कंदगुप्त	• 455 ई. से 467 ई. तक शासन किया, वैष्णव थे, कुमारगुप्त के पुत्र थे, हूणों के हमले को पीछे हटाया, लेकिन इससे उनके साम्राज्य की तिजोरी पर दबाव पड़ा
विष्णुगुप्त	• गुप्त वंश का अंतिम ज्ञात शासक (540 ई. - 550 ई.)

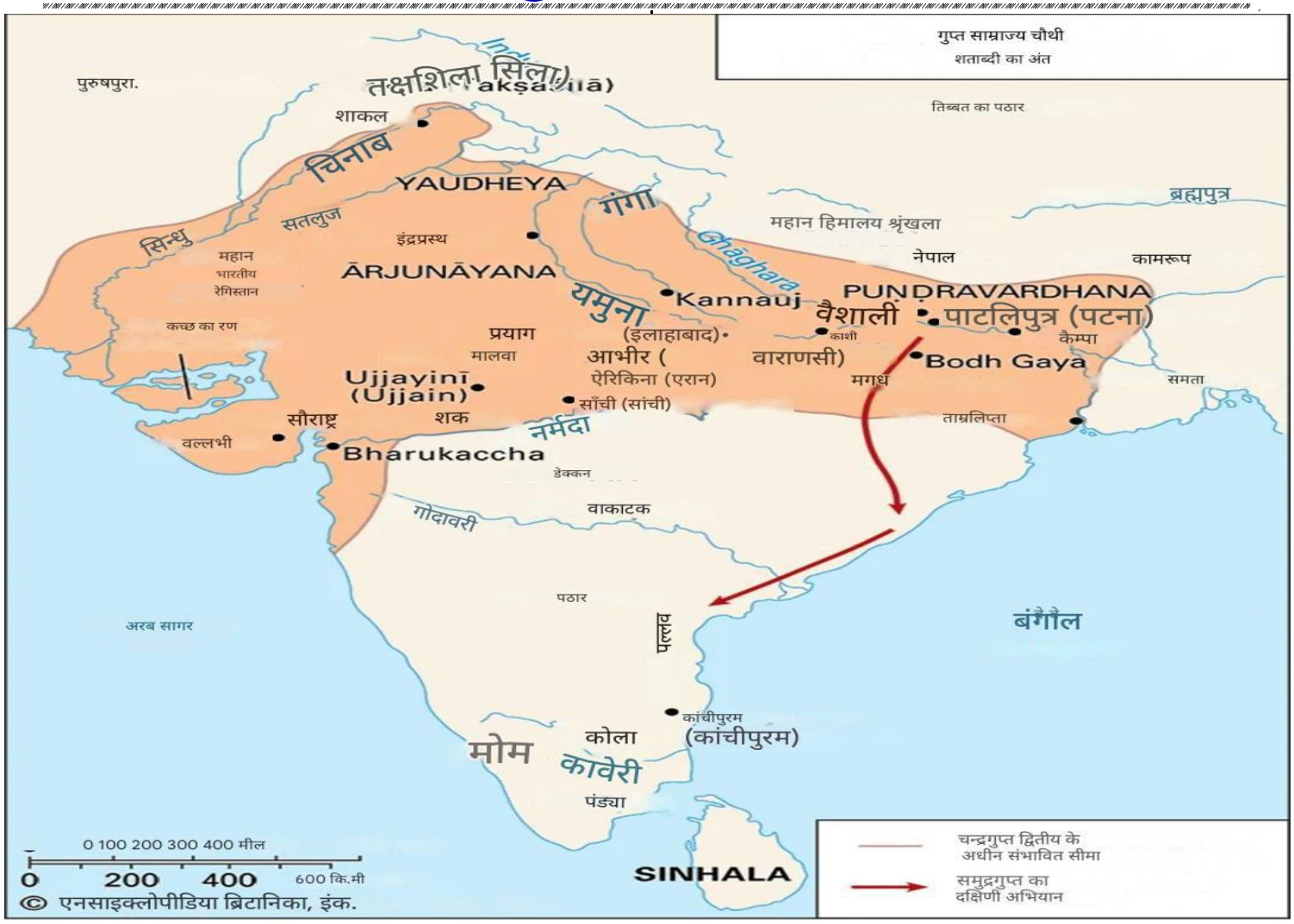

❖ ***गुप्त साम्राज्य के शासक***

चंद्रगुप्त प्रथम (320 - 335 ई.)

- *घातोत्कच का पुत्र था।*
- *चंद्रगुप्त प्रथम को गुप्त युग का संस्थापक माना जाता है, जिसकी शुरुआत 319-320 ईस्वी में उनके अभिषेक के साथ हुई थी।*
- *उन्होंने लिच्छवियों (नेपाल) के साथ वैवाहिक गठबंधन करके अपनी स्थिति मजबूत की। उन्होंने लिच्छवी वंश की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया और इससे गुप्त परिवार (वैश्य) की शक्ति और प्रतिष्ठा बढ़ी।*
- *उन्होंने विजयों के माध्यम से अपने राज्य का विस्तार किया। 321 ईस्वी तक उनका क्षेत्र गंगा नदी से प्रयाग तक फैला हुआ था।*
- *उन्होंने अपनी रानी और खुद के संयुक्त नाम पर सिक्के जारी किए।*
- *उन्होंने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।*
- *वह एक छोटी रियासत को एक महान साम्राज्य में बदलने में सफल रहे।*
- *उनके साम्राज्य में उत्तर प्रदेश, बंगाल और आधुनिक बिहार के कुछ हिस्से शामिल थे, जिनकी राजधानी पाटलिपुत्र थी।*
- *उन्हें गुप्त साम्राज्य का पहला महान राजा माना जाता है।*

समुद्रगुप्त (सी. 335/336 - 375 ई.)

- *चंद्रगुप्त प्रथम के पुत्र और उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त द्वारा गुप्त साम्राज्य का काफी विस्तार किया गया था।*
- *इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख (प्रयाग-प्रशस्ति) उनकी उपलब्धियों का विस्तृत विवरण देता है। उन्होंने युद्ध और विजय की नीति का पालन किया। यह लंबा शिलालेख उनके दरबारी कवि हरिसेन द्वारा शुद्ध संस्कृत में रचा गया था। शिलालेख उसी स्तंभ पर उत्कीर्ण है जिस पर शांतिप्रिय अशोक का शिलालेख है।*
- *अधिकांश भारतीय उपमहाद्वीप प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनके नियंत्रण में था - उत्तर में नेपाल और पंजाब के राज्यों से लेकर दक्षिण-पूर्व में कांचीपुरम के पल्लव राज्य तक। कुषाण शासन के अंतिम अवशेष, जैसे शक, मुंडा और यहां तक कि सिंहल (श्रीलंका) के स्वतंत्र क्षेत्र ने उनकी अधिपत्य को स्वीकार किया। समुद्रगुप्त द्वारा जीते गए स्थानों और क्षेत्रों को पांच समूहों में विभाजित किया जा सकता है:*
- ***समूह I** - गंगा-यमुना दोआब के शासकों को शामिल किया गया, जिन्हें पराजित किया गया था। उन्होंने नौ नाग शासकों को उखाड़ फेंका और उनके क्षेत्रों को अपने अधीन कर लिया।*
- ***समूह II** - पूर्वी हिमालयी राज्यों और नेपाल, असम, बंगाल आदि के कुछ सीमांत राज्यों के शासकों को शामिल किया*

गुप्त अर्थव्यवस्था

गुप्त अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं में एक संपन्न व्यापार (जो बाद के समय में हूण आक्रमणों के कारण बुरी तरह प्रभावित हुआ था), पश्चिम और पूर्व में बंदरगाहों से प्रचुर मात्रा में सीमा शुल्क राजस्व, एक संपन्न मजबूत गिल्ड प्रणाली, संपन्न विनिर्माण उद्योग और एक उच्च जीवन स्तर शामिल था।

व्यापार

- गुप्त का अभी भी एक संपन्न रोमन व्यापार था, लेकिन बाद के हिस्से में, हूण आक्रमणों से व्यापार बुरी तरह प्रभावित हुआ था। कुषाण काल के दौरान विकसित व्यापारिक संपर्क जारी रहे और पश्चिमी भारत में चंद्रगुप्त द्वितीय की विजय ने इस व्यापार में और वृद्धि की। लोग समृद्ध थे और वे बढ़ने और फलने-फूलने के लिए स्वतंत्र थे। महत्वपूर्ण बंदरगाह शहर ब्रिगुकाच्छा (भरूच), कल्याण और सिंध थे, जो रोमनों के साथ थोक व्यापार केंद्र थे। उज्जैन एक प्रमुख व्यावसायिक केंद्र बन गया था और यह दक्षिणी और उत्तरी भारत से जुड़ा हुआ था। नासिक, पैठण, पाटलिपुत्र, बनारस अन्य प्रमुख व्यापारिक केंद्र थे।
- रेशम, चमड़े के सामान, फर, लोहे के उत्पाद, हाथी दांत, मोती, मसाले और इंडिगो प्रमुख निर्यात वस्तुएं थीं। तम्रलिप्ति बंदरगाह पूर्वी एशिया के साथ व्यापार का एक अच्छा स्रोत था। अधिकांश वस्तुओं पर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में टोल के रूप में मूल्य का पांचवां हिस्सा कर लगाया जाता था।

कृषि

कृषि गुप्त साम्राज्य का मुख्य व्यवसाय था और इसमें कोई सरकारी हस्तक्षेप नहीं था। भूमि उपजाऊ थी और सिंचाई के साधन सरल थे।

व्यवसाय

- गुप्त काल में कई कपड़ा केंद्र थे और इस काल के दौरान रेशम उद्योग का उल्लेखनीय विकास हुआ। मंदसौर अभिलेख बताता है कि रेशम उद्योग के विकास के लिए गुप्त लोगों को काफी मदद मिली थी। सोने, चांदी और तांबे का उपयोग आभूषण बनाने और सिक्के जारी करने में किया जाता था। सोने के सिक्के साम्राज्य के वैभव, शक्ति और समृद्धि को दर्शाते हैं।
- समुद्रगुप्त और कुमारगुप्त के सिक्के अश्वमेध के बाद जारी किए गए सिक्कों पर एक यूपस्तंभ से बंधे घोड़े को दर्शाया गया है। चंद्रगुप्त के सिक्कों पर एक सांप को फाड़ते हुए गरुड़ अंकित है।

गिल्ड प्रणाली

प्राचीन इतिहास में, गिल्ड प्रणालियों की झलक जातक कथाओं में देखी जाती है। गिल्ड कारीगरों और व्यापारियों के संगठनों को संदर्भित करते हैं, जिनका समाज में उच्च स्थान है। गुप्त युग में, गिल्ड की गतिविधियाँ बढ़ गईं और इन गतिविधियों को विभिन्न साहित्य, शिलालेख, मिट्टी की मुद्राओं आदि में दर्ज किया गया है। रघुवंश में वास्तुकारों के गिल्ड का उल्लेख है। इंदौर ताम्रपत्र अभिलेख में तेलियों के एक गिल्ड का उल्लेख है। मंदसौर अभिलेख में रेशम बुनकरों के गिल्ड का उल्लेख है। गुप्त काल के बाद गिल्ड प्रणाली का ह्रास हुआ।

गुप्त साम्राज्य का साहित्य

- **संस्कृत साहित्य** गुप्त काल में बहुत समृद्ध हुआ। महान कवि और नाटककार **कालिदास** चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में थे। उन्होंने **अभिज्ञानशाकुंतलम**, **कुमारसंभवम**, **मालविकाग्निमित्रम**, **ऋतुसंहारम**, **मेघदूतम**, **विक्रमोर्वशीयम**, और **रघुवंशम** जैसे महान ग्रंथों की रचना की।
- प्रसिद्ध संस्कृत नाटक **मृच्छकटिकम** इसी काल में रचा गया, जिसे **शूद्रक** द्वारा लिखा गया माना जाता है।
- कवि **हरिषेण** ने भी चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार को अलंकृत किया। उन्होंने **इलाहाबाद प्रशस्ति** (अभिलेख) की रचना की।
- पंचतंत्र के लेखक **विष्णु शर्मा** इसी युग में थे।
- **अमर सिंह** (व्याकरणज्ञ और कवि) ने संस्कृत का शब्दकोश **अमरकोश** लिखा।
- **विशाखदत्त** ने **मुद्राराक्षस** की रचना की।
- अन्य व्याकरणज्ञ जिन्होंने संस्कृत भाषा में योगदान दिया, उनमें **वररुचि** और **भर्तृहरि** शामिल हैं।

गुप्त साम्राज्य की विरासत – विज्ञान

- विज्ञान, गणित और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में गुप्त युग ने कई रोचक प्रगतियां देखीं।
- महान भारतीय गणितज्ञ और खगोलशास्त्री **आर्यभट्ट** ने **सूर्य सिद्धांत** और **आर्यभटीय** ग्रंथ लिखे।
- आर्यभट्ट ने **शून्य** की अवधारणा दी।
- उन्होंने **पाई (π)** का मान बताया।
- उन्होंने यह सिद्ध किया कि पृथ्वी चपटी नहीं है, बल्कि यह अपनी धुरी पर घूमती है और सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है।
- उन्होंने पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी भी बताई, जो वास्तविक दूरी के बहुत करीब है।
- उन्होंने ज्यामिति, खगोल विज्ञान, गणित और त्रिकोणमिति पर लेखन किया।
- **भारतीय संख्यात्मक प्रणाली**, जो वर्तमान में उपयोग की जाने वाली दशमलव आधारित प्रणाली है, इसी युग के विद्वानों द्वारा विकसित की गई।
- **वराहमिहिर** ने **बृहत्संहिता** की रचना की। वे एक खगोलशास्त्री और ज्योतिषी थे।
- **नालंदा विश्वविद्यालय**, जो बौद्ध और अन्य विषयों की शिक्षा का केंद्र था, विदेशों से भी छात्रों को आकर्षित करता था। गुप्त साम्राज्य ने इस प्राचीन शिक्षास्थल को संरक्षण दिया।

गुप्त साम्राज्य की विरासत – कला और स्थापत्य

- कई शानदार मंदिर, महल, चित्रकारी और मूर्तियाँ बनाई गईं।
- देवगढ़, उत्तर प्रदेश का दशावतार मंदिर सबसे पुराने हिंदू मंदिरों में से एक है। यह गुप्तकालीन वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
- अजंता की भित्ति चित्रकारी में जातक कथाओं के माध्यम से बुद्ध के जीवन का चित्रण किया गया है। अजंता, एलोरा, मथुरा, सारनाथ और श्रीलंका के अनुराधापुर और सिगिरिया जैसे स्थान गुप्त कला और स्थापत्य के उदाहरण हैं।
- इस समय शास्त्रीय भारतीय संगीत और नृत्य का उदय हुआ था।
- आज भी दक्षिण-पूर्व एशिया में गुप्त कला की विरासत देखी जा सकती है।
- सुल्तानगंज में मिला 7.5 फीट ऊँचा कांस्य बुद्ध गुप्त काल की देन है।
- दिल्ली के मेहौली में स्थित लोहे का स्तंभ इस काल की एक अद्भुत कृति है। यह 7 मीटर लंबा स्तंभ है और धातुओं के ऐसे संयोजन से बना है कि यह जंग-मुक्त है। यह उस समय के भारतीयों के धातुकर्म कौशल का प्रमाण है।

गुप्त साम्राज्य की विरासत - सामाजिक संस्कृति और धर्म

- इस दौरान हिंदू महाकाव्यों को अंतिम रूप दिया गया। गुप्तों के अधीन हिंदू धर्म को भी प्रोत्साहन मिला और यह पूरे भारत में फला-फूला।
- हालांकि गुप्त राजा वैष्णव थे, लेकिन वे बौद्ध धर्म और जैन धर्म के प्रति सहिष्णु थे। उन्होंने बौद्ध कला का संरक्षण किया। (लिंक किए गए लेख से बौद्ध धर्म और जैन धर्म के अंतर जानें।)
- इस समय के आसपास शक्ति पंथ उभरा।
- बलिदान की जगह भक्ति और पूजा ले रही थी।
- इस दौरान तंत्र जैसे गुप्त साधनाएँ भी उभरीं।
- ऐसा माना जाता है कि शतरंज का खेल गुप्त काल से उत्पन्न हुआ। इसे "चतुरंग" कहा जाता था, जिसका अर्थ है सेना के चार विभाग – पैदल सेना (प्यादा), घुड़सवार सेना (नाइट), हाथी दल (बिशप), और रथ (रुक)।

गुप्त साम्राज्य के महत्वपूर्ण तथ्य

- गुप्त वंश के शासकों ने परमेश्वर, सम्राट, परमभट्टारक, महाराजाधिराज जैसी भव्य उपाधियां धारण कीं।
- अश्वमेध यज्ञ गुप्त काल में एक आम प्रथा थी।
- गुप्त प्रशासन विकेंद्रित और अर्ध-सामंती प्रकृति का था।
- अधिकांश गुप्त शासक वैष्णव धर्म के अनुयायी थे।
- गुप्त काल को प्राचीन भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है, क्योंकि इस काल में विभिन्न क्षेत्रों में कई उपलब्धियां हुईं।
- गुप्त युग में दो कलात्मक शैलियां विकसित हुईं – नागर शैली और द्रविड़ शैली।
- रामगुप्त एकमात्र गुप्त शासक थे जिन्होंने तांबे के सिक्के जारी किए।
- गुप्त शासनकाल में सबसे अधिक स्वर्ण मुद्राएं जारी की गईं।

> पश्चिम बंगाल के **नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बायोमेडिकल जीनोमिक्स (NIBMG)** ने 2016 में नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज जर्नल में एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी, जिसमें बताया गया था कि कैसे आनुवंशिक डेटा ने वैज्ञानिकों को कठोर जाति व्यवस्था के उद्भव का पता लगाने में मदद की थी, जो लगभग 1,600 साल पहले गुप्त काल के दौरान हुआ था, जब बहुत सारे सामाजिक परिवर्तन हुए थे।

गुप्त साम्राज्य का पतन

गुप्त साम्राज्य के शासनकाल के दौरान, उनकी प्रशासनिक संरचना सर्वोच्चता और अधीनता के संबंधों को दर्शाती थी। इसी तरह, शिल्प उत्पादन, गिल्ड और व्यापार भी गुप्त साम्राज्य की महत्वपूर्ण विशेषताएं थीं। इसलिए, गुप्तों के युग को कला का शास्त्रीय युग कहा जाता है। गुप्त साम्राज्य के पतन का कारण विभिन्न कारकों जैसे वकाटक से प्रतिस्पर्धा, मालवा के यशोधर्मन का उदय और हूण आक्रमणों को माना जाता है।

गुप्त साम्राज्य के पतन के कारण

- गुप्त साम्राज्य का पतन चंद्रगुप्त द्वितीय के पोते स्कंदगुप्त के शासनकाल के दौरान शुरू हुआ। वह हूणों और पुष्यमित्रों के खिलाफ प्रतिशोध लेने में सफल रहा, लेकिन इससे उसके साम्राज्य की अर्थव्यवस्था और संसाधन समाप्त हो गए।
- गुप्त वंश का अंतिम मान्यता प्राप्त राजा विष्णुगुप्त था जिसने 540 से 550 ईस्वी तक शासन किया।
- शाही परिवार के बीच आंतरिक संघर्ष और कलह ने इसे कमजोर कर दिया।
- एक गुप्त राजा बुद्धगुप्त के शासनकाल के दौरान, पश्चिमी दक्खन के वकाटक शासक नरेंद्रसेन ने मालवा, मेकल और कोसल पर आक्रमण किया। बाद में, एक अन्य वकाटक राजा हरिषेण ने मालवा और गुजरात को गुप्तों से जीत लिया।
- स्कंदगुप्त के शासनकाल के दौरान, हूणों ने उत्तर-पश्चिम भारत पर आक्रमण किया लेकिन उन्हें प्रतिबंधित कर दिया गया। लेकिन छठी शताब्दी में, उन्होंने मालवा, गुजरात, पंजाब और गंधार पर कब्जा कर लिया। हूण आक्रमण ने देश में गुप्त पकड़ को कमजोर कर दिया।
- पूरे उत्तर में स्वतंत्र शासक उभरे जैसे मालवा के यशोधर्मन, उत्तर प्रदेश के मौखरी, सौराष्ट्र में मैत्रक और बंगाल में अन्य। गुप्त साम्राज्य केवल मगध तक ही सीमित हो गया था। (यशोधर्मन ने हूण प्रमुख मिहिरकुल के खिलाफ सफलतापूर्वक प्रतिशोध लेने के लिए नरसिंहगुप्त के साथ मिलकर काम किया था।)
- बाद के गुप्तों ने अपने पूर्वजों के विपरीत हिंदू धर्म के बजाय बौद्ध धर्म का अनुसरण किया, जिससे साम्राज्य भी कमजोर

हुआ। उन्होंने साम्राज्य-निर्माण और सैन्य विजय पर ध्यान केंद्रित नहीं किया।

- इसलिए कमजोर शासकों के साथ-साथ विदेशी और देशी शासकों के लगातार आक्रमणों ने गुप्त साम्राज्य के पतन का कारण बना।
- छठी शताब्दी की शुरुआत तक, साम्राज्य विघटित हो गया था जो कई क्षेत्रीय प्रमुखों द्वारा शासित था।

गुप्त साम्राज्य के पतन के विभिन्न कारणों पर नीचे चर्चा की गई है -

हूण आक्रमण

गुप्त राजकुमार स्कंदगुप्त ने प्रारंभिक हूण आक्रमण के खिलाफ बहादुरी से और सफलतापूर्वक लड़ाई लड़ी। हालांकि, उनके उत्तराधिकारी कमजोर साबित हुए और हूणों के आक्रमण को रोक नहीं सके। हूणों ने उत्कृष्ट घुड़सवारी का प्रदर्शन किया और कुशल तीरंदाज थे, जिससे उन्हें न केवल ईरान में बल्कि भारत में भी सफलता प्राप्त करने में मदद मिली। 5वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, हूण प्रमुख तोरमाण ने मध्य भारत में भोपाल के पास एरण तक पश्चिमी भारत के बड़े हिस्से पर विजय प्राप्त की। 485 ई. तक, हूणों ने पंजाब, राजस्थान, कश्मीर, पूर्वी मालवा और मध्य भारत के एक बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया था। तोरमाण (515 ई. में) का उत्तराधिकारी उसका पुत्र मिहिरकुल हुआ, जो एक अत्याचारी शासक था जैसा कि कल्हण की राजतरंगिणी में उल्लेख किया गया है और ह्वेन त्सांग उसे बौद्धों के उत्पीड़क के रूप में संदर्भित करता है। मिहिरकुल को पराजित किया गया और हूण शक्ति को मालवा के यशोधर्मन, गुप्त साम्राज्य के नरसिंह गुप्त बालादित्य और मौखरियों द्वारा उखाड़ फेंका गया। हालांकि, हूणों पर इस जीत से गुप्त साम्राज्य को पुनर्जीवित नहीं किया जा सका।

सामंतों का उदय

सामंतों का उदय एक अन्य कारक था जिसने गुप्त साम्राज्य के पतन का कारण बना। मालवा के यशोधर्मन (जो औलिकर सामंत परिवार से संबंधित थे) ने मिहिरकुल को पराजित करने के बाद सफलतापूर्वक गुप्तों के अधिकार को चुनौती दी और 532 ईस्वी में, लगभग पूरे उत्तरी भारत की विजय का स्मरण करते हुए विजय स्तंभ स्थापित किया। हालांकि यशोधर्मन का शासन अल्पकालिक था, लेकिन इसने निश्चित रूप से गुप्त साम्राज्य को एक बड़ा झटका दिया। अन्य सामंतों ने भी गुप्तों के खिलाफ विद्रोह किया और अंततः बिहार, बंगाल, मध्य प्रदेश, वल्लभी, गुजरात, मालवा आदि में स्वतंत्र हो गए। यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि स्कंदगुप्त (467 ईस्वी) के शासनकाल के बाद पश्चिमी मालवा और सौराष्ट्र में शायद ही कोई सिक्का या शिलालेख मिला हो।

आर्थिक पतन

5वीं शताब्दी के अंत तक, गुप्तों ने पश्चिमी भारत खो दिया था और इससे गुप्तों को व्यापार और वाणिज्य से होने वाली समृद्ध आय से वंचित होना पड़ा होगा और इस तरह उन्हें आर्थिक रूप से अपंग कर दिया होगा। गुप्तों के आर्थिक पतन का संकेत बाद के गुप्त शासकों के सोने के सिक्कों से मिलता है, जिनमें सोने की धातु का प्रतिशत कम होता है। धार्मिक और अन्य उद्देश्यों के लिए भूमि अनुदान की प्रथा ने भी राजस्व को कम कर दिया जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक अस्थिरता हुई।

निष्कर्ष

गुप्त साम्राज्य के पतन के कारण उत्तरी भारत के विभिन्न हिस्सों में कई शासक वंशों का उदय हुआ, जैसे कि थानेश्वर के पुष्यभूति, कन्नौज के मौखरी और वल्लभी के मैत्रक। प्रायद्वीपीय भारत में, चालुक्य और पल्लव क्रमशः दक्खन और उत्तरी तमिलनाडु में शक्तिशाली शक्तियों के रूप में उभरे।

गुप्त काल में प्रमुख साहित्यिक कृतियां और लेखक

गुप्त काल को सांस्कृतिक विकास के सुनहरे युग के रूप में जाना जाता है। इसे सर्वोच्च और सबसे उत्कृष्ट समय में से एक माना जाता है। गुप्त राजाओं ने संस्कृत साहित्य का संरक्षण किया। उन्होंने उदारतापूर्वक संस्कृत विद्वानों और कवियों की मदद की। अंततः संस्कृत भाषा सुसंस्कृत और शिक्षित लोगों की भाषा बन गई।

कालिदास

- वह एक शास्त्रीय संस्कृत लेखक थे, जिन्हें व्यापक रूप से गुप्त काल के सबसे महान कवि और नाटककार माना जाता है।
- कालिदास की छह प्रमुख कृतियाँ हैं:
- अभिज्ञान शाकुंतलम
- विक्रमोर्वशीयम्
- मालविकाग्निमित्रम्
- महाकाव्य रघुवंशम्
- कुमारसम्भवम्
- मेघदूतम्

विशाखदत्त

- विशाखदत्त के प्रसिद्ध नाटक हैं:
- मुद्राराक्षस
- मुद्राराक्षस का अर्थ है "राक्षस की अंगूठी" और यह चंद्रगुप्त मौर्य के सिंहासन पर चढ़ने का वर्णन करता है।

शूद्रक

- वह एक राजा होने के साथ-साथ कवि भी थे।
- उनके द्वारा रचित तीन प्रसिद्ध संस्कृत नाटक हैं:
- मृच्छकटिकम् (छोटी मिट्टी की गाड़ी)
- विनायवासदत्त
- एक भाण (लघु एक-अंकीय एकल संवाद)
- पद्मप्रभृतक

अध्याय - 14

मुगल साम्राज्य

मुगल साम्राज्य भारतीय इतिहास का सबसे बड़ा साम्राज्य था, जो प्रशासनिक नवाचारों, सैन्य शक्ति, आर्थिक समृद्धि और राजनीतिक विस्तार के दृष्टिकोण से सबसे बड़ा था।

मुगल वंश

16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से, मुगलों ने आगरा और दिल्ली से अपने साम्राज्य का विस्तार करना शुरू किया और 17वीं शताब्दी तक उन्होंने उपमहाद्वीप के लगभग सभी हिस्सों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। उन्होंने प्रशासन की संरचनाओं और शासकत्व के विचारों को लागू किया, जो उनके शासन के बाद भी जीवित रहे और उन्होंने एक राजनीतिक धरोहर छोड़ी जिसे उपमहाद्वीप के अगले शासकों ने नकारा नहीं किया। मुगल काल भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण चरण था। यह लेख भारतीय इतिहास में मुगलों के योगदान को जैसे आर्थिक और सामाजिक जीवन, कृषि, व्यापार विकास आदि पर प्रकाश डालता है।

❖ मुगल काल (1526-40 और 1555-1857)

मुगल दो महान शाही वंशों के वंशज थे।

बाबर: जो भारत में मुगल साम्राज्य के संस्थापक थे, वह अपने पिता की ओर से तैमूर और अपनी मां की ओर से चंगेज़ खान से जुड़े हुए थे। बाबर ने अपने पिता से फरगना (उज़्बेकिस्तान) का राज्य लिया था, लेकिन जल्द ही वह अपना राज्य खो बैठे। आर्थिक कठिनाइयाँ, काबुल पर उज़्बेक हमले का डर, और राणा सांगा का भारत में आक्रमण करने के लिए बुलावा बाबर को भारत की ओर देखने के लिए मजबूर कर दिया।

बाबर ने अपनी वंशावली तैमूर (पिता की ओर से) से जोड़ी थी, जिन्होंने तैमूरी साम्राज्य की स्थापना की थी। इस कारण से मुगल साम्राज्य को तैमूरी भी कहा जाता हैं। साथ ही, बाबर ने अपनी वंशावली चंगेज़ ख़ान (माँ की ओर से) से भी जोड़ी थी।

मंगोल + तुर्की = मुग़ल (जिसका अर्थ है - साहसी या वीर)।

मुगल कौन थे?

मुगल भारत में एक विदेशी आक्रमणकारी जाति थी, और उनकी वंशावली को मध्य एशिया में स्थित तैमूरी साम्राज्य से जोड़ा जा सकता हैं। मुग़ल साम्राज्य के संस्थापक बाबर थे, जो तैमूर के वंशज थे। बाबर ने भारत पर आक्रमण किया और 1526 में अपने साम्राज्य की स्थापना की। इसके बाद के मुग़ल शासकों ने साम्राज्य का विस्तार किया।

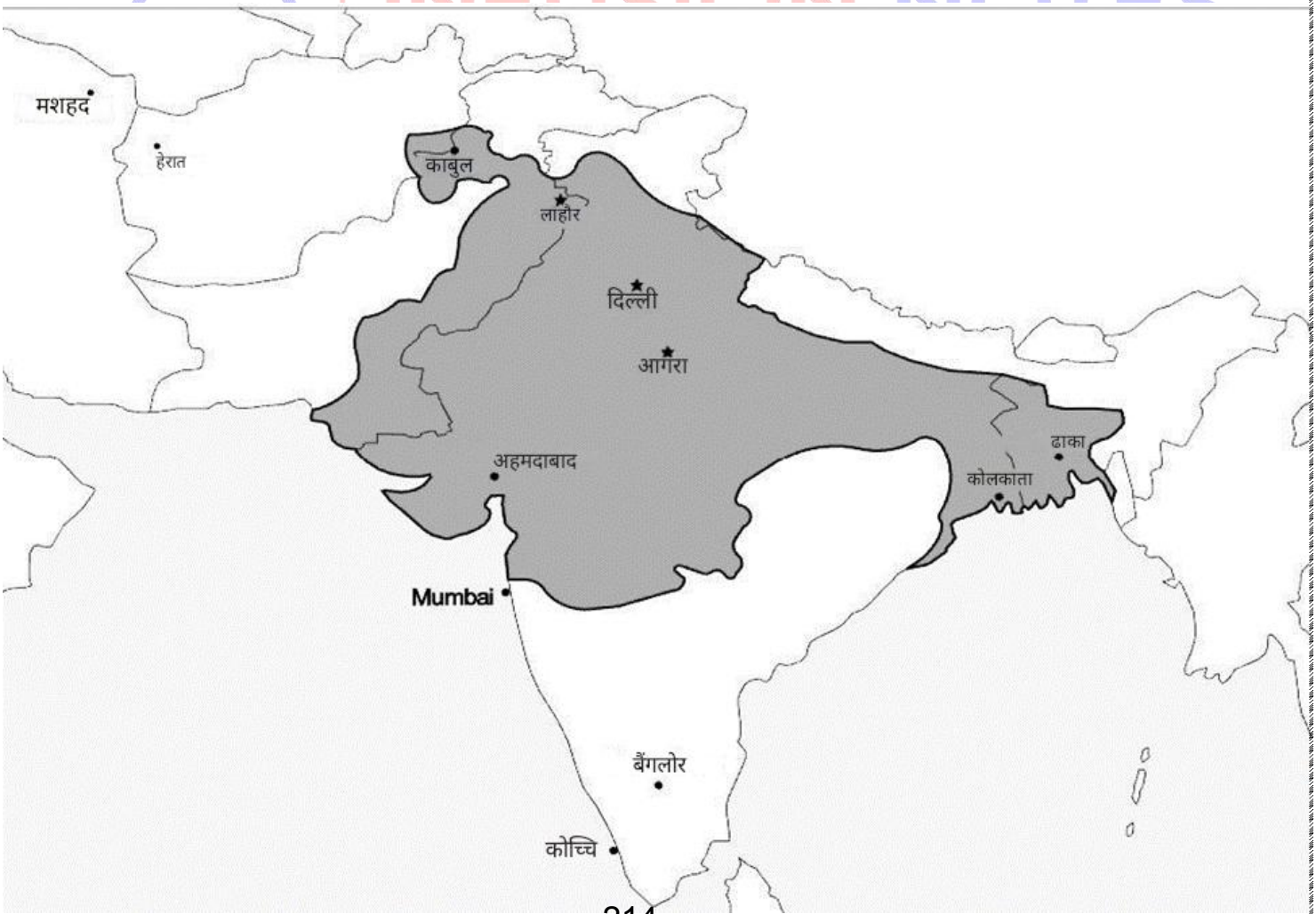

मुगल मुस्लिम थे, और इस्लाम के प्रसार के लिए उन्होंने दर्जनों मस्जिदें बनाई। आज भारत, पाकिस्तान औरबांग्लादेश में जो इस्लामी जनसंख्या है, वह अधिकांशतः मुग़ल काल से जुड़ी हुई है।

मुगल साम्राज्य की स्थापना

युवा शहजादा बाबर, जो तैमूर (पिता की ओर) और चंगेज़ ख़ान (माँ की ओर) के वंशज थे, ने 1526 में पानीपत की पहली लड़ाई में दिल्ली के सुलतान इब्राहीम शाह लोदी को हराकर उत्तर भारत में अपनी विजय पूरी की।

बाबर मध्य एशिया में वंशानुगत संघर्षों से भागकर आए थे; उनके चाचा और अन्य युद्ध नेता बार-बार उन्हें समरकंद और फेर्गाना जैसे सिल्क रोड के शहरों पर शासन करने का अधिकार नहीं देते थे, जो उनके जन्मसिद्ध अधिकार थे। हालांकि, बाबर ने काबुल में एक ठिकाना स्थापित किया, और वहां से दक्षिण की ओर बढ़ते हुए भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्सों को जीत लिया। बाबर ने अपनी वंशावली को "तैमूरी" कहा, लेकिन यह वंश "मुगल" वंश के नाम से अधिक प्रसिद्ध हुआ — यह नाम "मंगोल" शब्द का फारसी रूपांतरण था।

❖ मुगल साम्राज्य का इतिहास

अकबर के शासनकाल (1556-1605) के दौरान मुग़ल साम्राज्य की अनुमानित सीमाएँ

मुग़ल साम्राज्य के उत्थान और पतन को दर्शाने वाले तीन प्रमुख सम्राट हैं। पहला सम्राट **अकबर** है, जो मुग़ल वंश के संस्थापक बाबर का पुत्र था। अकबर ने 1556 से 1605 तक लगभग 50 वर्षों तक शासन किया। वह एक महान विजेता थे जिन्होंने साम्राज्य का आकार बहुत बढ़ाया। अकबर को एक सहिष्णु शासक के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने सभी धर्मों को सम्मान दिया, जिसमें हिंदू धर्म और जैन धर्म भी शामिल हैं।

अकबर एक महान कला प्रेमी और शैक्षिक संरक्षक भी थे। उन्होंने मुग़ल सैन्य वास्तुकला के कई महानतम कार्यों का निर्माण कराया। उनकी शासननीति और प्रशासनिक सुधारों के कारण मुग़ल साम्राज्य ने अपने सर्वोत्तम विस्तार को देखा और उन्होंने भारतीय समाज में धर्मनिरपेक्षता का आदर्श प्रस्तुत किया।

शाहजहाँ वह प्रसिद्ध मुग़ल सम्राट थे जिन्होंने **ताज महल** का निर्माण कराया। शाहजहाँ का शासनकाल 1628 से 1658 तक था, जो मुग़ल साम्राज्य के सांस्कृतिक उत्कर्ष का समय था। ताज महल की शानदार बनावट और महंगे सामग्रियों से यह स्पष्ट होता है कि उस समय मुग़ल साम्राज्य कितना शक्तिशाली और समृद्ध था। जबकि ताज महल शायद सबसे प्रसिद्ध उदाहरण है, इसके अलावा भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में कई अन्य मुग़ल वास्तुकला के अद्भुत उदाहरण पाए जाते हैं।

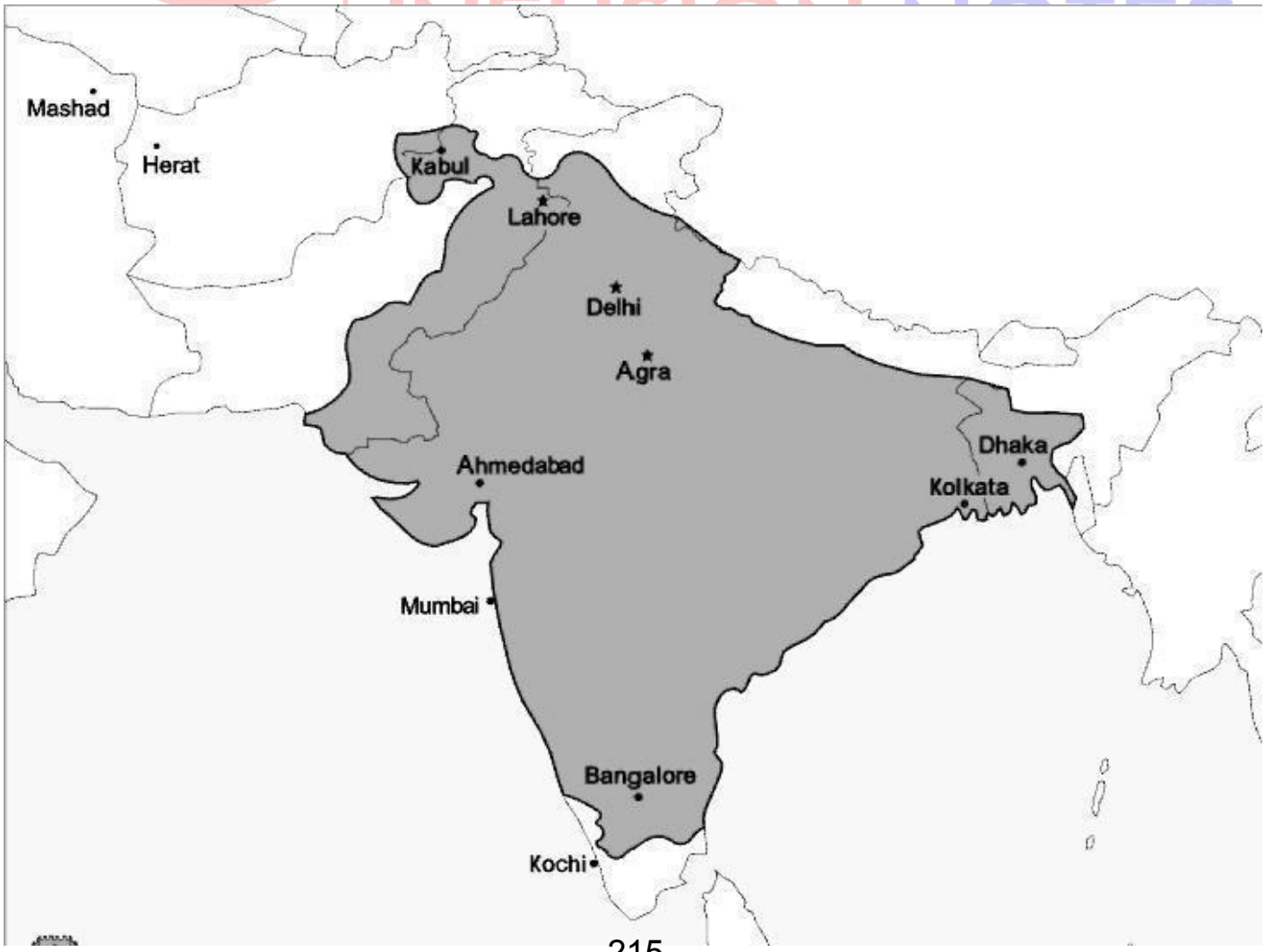

➢ औरंगज़ेब के शासनकाल (1658-1707) के दौरान मुग़ल साम्राज्य की अनुमानित सीमाएँ

औरंगज़ेब 1658 से 1707 तक शासन करने वाले मुग़ल सम्राट थे और वह एक कुशल सैन्य कमांडर थे। उन्होंने नए क्षेत्रों को जीता और मुग़ल साम्राज्य को उसके सबसे बड़े भौगोलिक विस्तार तक पहुँचाया। लेकिन औरंगज़ेब को एक दमनकारी शासक के रूप में भी जाना जाता है, जिन्होंने अक्सर हिंदू जनता को शोषित किया। उन्होंने गैर-मुसलमानों पर एक विशेष कर लगाया, जो बहुत अप्रिय था। औरंगज़ेब ने कई प्रभावशाली मस्जिदों और अन्य इमारतों का निर्माण कराया, जबकि पवित्र हिंदू मंदिरों की उपेक्षा की।

औरंगज़ेब के शासन का एक महत्वपूर्ण पहलू यह था कि उनके शासनकाल में मुग़ल साम्राज्य की शक्ति में गिरावट शुरू हो गई थी। औरंगज़ेब के बाद, एक नई शक्ति, **मराठा साम्राज्य**, ने दक्षिण भारत से आक्रमण किया और मुग़ल साम्राज्य के अधिकांश क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर लिया। मराठों ने 1700 के दशक के अंत में दिल्ली पर अंतिम हमले की योजना बनाई। हालांकि, वे कुछ समय के लिए ही सत्ता में बने रह सके।

ब्रिटिश साम्राज्य ने 1818 में, एक श्रृंखला युद्धों के बाद, भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्सों पर कब्ज़ा कर लिया। ब्रिटिशों ने मुग़ल वंश को फिर से स्थापित किया, लेकिन अब मुग़ल सम्राट को एक कठपुतली शासक के रूप में इस्तेमाल किया जाने लगा, जबकि असली सत्ता ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों में थी। अंततः, 1857 में एक विद्रोह के बाद, अंतिम मुग़ल सम्राट को भारत से निर्वासित कर दिया गया।

उत्तराधिकारी का नियम

मुग़ल साम्राज्य में उत्तराधिकारी का चयन केवल **प्रथमपुत्रवाद** (primogeniture) पर आधारित नहीं था, यानी सबसे बड़े बेटे को ही पिता का उत्तराधिकारी नहीं बनाया जाता था। मुग़ल साम्राज्य में, हर पुत्र को अपने पिता की संपत्ति में समान हिस्सा मिलता था, और शासक परिवार के सभी पुरुषों को उत्तराधिकार का अधिकार था। इसका परिणाम यह होता था कि उत्तराधिकार प्रणाली एक खुले, लेकिन विवादास्पद, प्रकार की व्यवस्था बन जाती थी।

प्रत्येक पुत्र को अपनी स्वतंत्रता थी और जब वह परिपक्व हो जाता था, तो उसे एक स्थायी भूभाग सौंपा जाता था, जिसे वह अपने तरीके से प्रबंधित कर सकता था। जब शासक की मृत्यु होती थी, तो राजकुमारों के बीच अक्सर उग्र युद्ध होते थे। मुग़ल साम्राज्य के उत्तराधिकार को इस फारसी वाक्यांश से समझा जा सकता है: "**तख़्त, या तख़्ता**" (यानि "या तो तख़्त, या फिर श्मशान क़ा बिछौना")।

➢ मुग़ल साम्राज्य का उत्कर्ष

हुमायूं उतने मजबूत शासक नहीं थे। **1540 में**, पश्तून शासक **शेर शाह सूरी** ने तैमूरी वंश को हराया और हुमायूं को सत्ता से उखाड़ फेंका। हुमायूं ने **1555 में** फारस की मदद से अपनी गद्दी फिर से हासिल की, लेकिन उस समय तक उन्होंने बाबर के साम्राज्य का विस्तार भी किया था। हुमायूं की **सीढ़ी से गिरकर मृत्यु** हो गई, जिसके बाद उनके 13 वर्षीय पुत्र **अकबर** को सम्राट घोषित किया गया।

अकबर ने पश्तूनों के बचे हुए हिस्सों को हराया और कुछ हिन्दू क्षेत्रों को तैमूरी नियंत्रण में लाया। उन्होंने **राजपूतों** को कूटनीति और विवाह गठबंधनों के माध्यम से अपने साम्राज्य में समाहित किया।

अकबर एक उत्साही साहित्य, कविता, वास्तुकला, विज्ञान, और चित्रकला के संरक्षक थे। हालांकि वह एक समर्पित मुस्लिम थे, लेकिन अकबर ने धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया और सभी धर्मों के संतों से ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया। उन्हें **अकबर महान** के नाम से जाना जाता है।

आर्थिक और सामाजिक जीवन

- भारत के सामाजिक और आर्थिक हालातों का उल्लेख कई **यूरोपीय यात्रियों** और व्यापारियों ने किया है। उनके खाता-बही में बहुत सारी जानकारी मिलती है।
- सामान्यतः इन खाता-बही में भारत की संपत्ति और समृद्धि का वर्णन किया गया है, और विद्वान विद्वान वर्गों के भव्य जीवन का भी विवरण मिलता है।
- वहीं, कुछ विदेशी लेखकों ने आम जनता, जैसे **किसान** और **कारीगर** की गरीबी और दुखों का भी उल्लेख किया है।

मुग़ल साम्राज्य के विद्वान वर्ग

- मुग़ल साम्राज्य में अधिकांश **विद्वान** वर्ग के लोग विदेशी थे, जैसे तुर्क और अफ़गान, और ये एक विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के रूप में थे।
- मुग़ल विद्वान को उच्च वेतन मिलता था, लेकिन उनकी खर्चे भी उतने ही अधिक थे।
- प्रत्येक विद्वान के पास बहुत सारे सेवक, घोड़े, हाथी आदि होते थे।
- संपन्न लोग रेशमी और कपास के कपड़े पहनते थे, जबकि गरीब लोग साधारण कपड़े पहनते थे।
- एक विदेशी, **निकितिन** ने उल्लेख किया था कि **दक्षिण भारत** में लोग नंगे पैर चलते थे, जो चमड़े की उच्च कीमत को दर्शाता था।
- आम लोगों का भोजन दाल, बाजरा और चावल होता था।
- तटीय क्षेत्रों में मछली सामान्य आहार था।
- दूध और दूध से बने उत्पाद अधिक मात्रा में उपलब्ध थे, लेकिन **नमक** और **चीनी** महंगे थे, जबकि **घी** और **तेल** सस्ते थे।

कृषि

(आभूषण की पत्थर कला) से सुंदर फूलों के डिज़ाइन बनाए गए थे।

ताज महल

- ताज महल में **पिएट्रा ड्यूरा** कला का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया।
- ताज महल को **निर्माता कला का गहना** माना जाता है।
- इसमें मुग़ल वास्तुकला के सभी प्रमुख रूप शामिल हैं।
- ताज महल की प्रमुख विशेषता है इसका विशाल **गुंबद** और चार **स्लेंडर मीनार** (पतले मीनार)।
- सजावट को न्यूनतम रखा गया है, जिससे इसकी भव्यता और भी निखर कर सामने आती है।
- **मोती मस्जिद** (आगरा में) को पूरी तरह से सफेद संगमरमर से बनाया गया था, जबकि **जामा मस्जिद** (दिल्ली) को लाल पत्थर से बनाया गया था।

❖ मुगल वास्तुकला की विशेषताएं

➢ **इस्लामी प्रभाव**

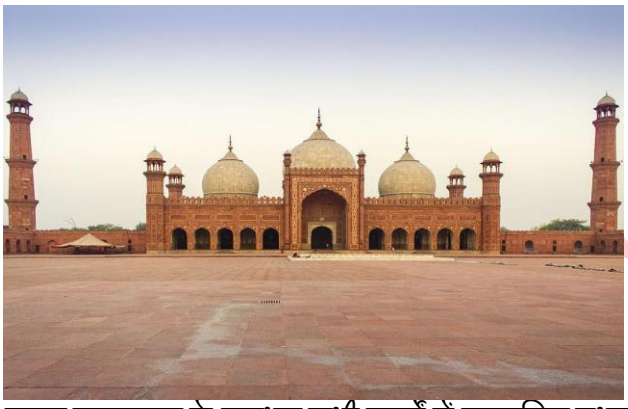

मुगल वास्तुकला के लगभग सभी कार्यों में इस्लामिक प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस्लामिक भवन निर्माण के तत्व जैसे कि **नुकीली मेहराबें**, **मुकर्णास**, **मिनारें**, और **गुम्बद** मुग़ल साम्राज्य की इमारतों में पाए जाते हैं। ऊपर दी गई **बदशाही मस्जिद** की छवि में, आप इन विशेषताओं को देख सकते हैं। मस्जिद के ऊँचे **मिनारें** एक महत्वपूर्ण स्थान पर स्थित थे जहाँ से **इस्लामी अज़ान (प्रार्थना का आवाहन)** दिया जाता था। यह मस्जिद तीन **प्याज के आकार के गुम्बदों** से बनी है, जो पहले की **पार्सी** और **टीमुरिद** वास्तुकला में भी पाए जाते हैं।

➢ **हिंदू प्रभाव**

हालाँकि मुग़ल इस्लाम का पालन करते थे, मुग़ल वास्तुकला में हिंदू मंदिरों से कई तत्वों का उपयोग किया गया है। हिंदू धर्म भारत के केंद्र में मुग़लों के आगमन से पहले ही प्रमुख धर्म था, और आज भी भारत की लगभग 80% जनसंख्या हिंदू धर्म को मानती है। ऊपर दी गई **लाहौर क़िला** की छवि में, आप सजावट से सुसज्जित **कॉलम (स्तंभ) के शीर्ष** देख सकते हैं, जिनमें भारतीय **हाथी** बनाए गए हैं। हाथी भारत के प्राचीन धर्मों में एक महत्वपूर्ण प्रतीक था, और यह लाहौर क़िले में पाए जाने वाले अन्य इस्लामी वास्तुकला के तत्वों के साथ पूरी तरह से मेल खाता है।

इस प्रकार, मुग़ल वास्तुकला में हिंदू धर्म के प्रभाव ने इसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और विविध बना दिया, जो विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक तत्वों का संगम था।

➢ **लाल बलुआ पत्थर**

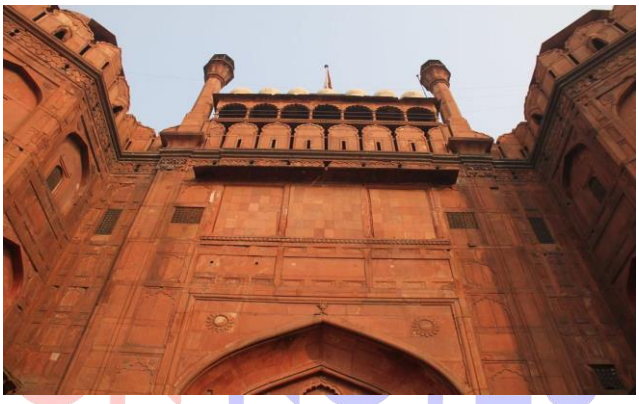

मुग़ल साम्राज्य की वास्तुकला में एक और महत्वपूर्ण तत्व **लाल बलुआ पत्थर** का उपयोग है। यह विशेष प्रकार का पत्थर साम्राज्य के कई हिस्सों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता था, और इसके लाल रंग की छटा कई प्रसिद्ध इमारतों में देखी जा सकती है, जैसे कि **लाल क़िला**, जिसका नाम ही इसके निर्माण सामग्री पर आधारित है। ऊपर दी गई छवि में **लाल क़िले** के प्रवेश द्वारों में से एक को देखा जा सकता है, जिसमें लाल बलुआ पत्थर की खुदी हुई सजावट की गई है। इस निर्माण सामग्री का उपयोग **आगरा क़िला**, **जामा मस्जिद** और **ताज महल** परिसर की बाहरी इमारतों में भी किया गया है।

इस प्रकार, लाल बलुआ पत्थर ने मुग़ल वास्तुकला को न केवल एक विशिष्ट रूप और पहचान दी, बल्कि इन इमारतों को मजबूत और टिकाऊ भी बनाया।

➢ **पत्थर की इनले (Stone Inlays)**

मुग़ल वास्तुकला के कई अद्भुत उदाहरणों में **पत्थर की इनले** का उपयोग किया गया है। पत्थर की इनले एक सामान्य सजावट की तकनीक है, जो प्राचीन काल से चली आ रही है। इसे 16वीं से 19वीं शताब्दी के बीच विशेष रूप से पुनर्जीवित किया गया। यूरोप में इसे अक्सर **पिएत्रा दुड़ा (Pietra dura)** कहा जाता है, जो एक इतालवी शब्द है,

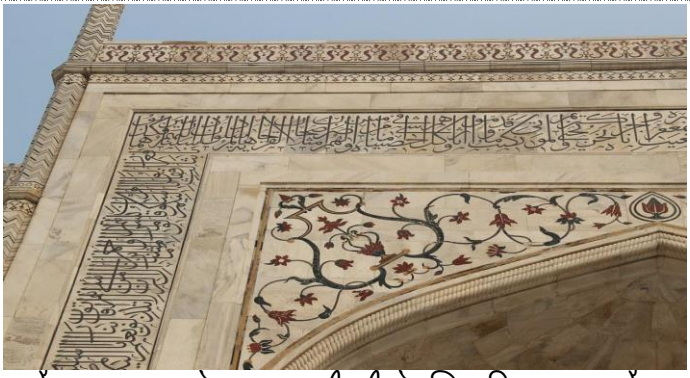

*और इसका उपयोग उस कारीगरी के लिए किया जाता है जो पुनर्जागरण काल के दौरान लोकप्रिय हुई थी। भारत में इस कला को **पारचिन कारी** (Parchin Kari) के नाम से जाना जाता है, और **ताज महल** में इसकी सबसे सुंदर मिसालें मिलती हैं।*

*यहाँ आप **अरबी लिपि** देख सकते हैं, जो फूलों और बेलों की एक इनले की सीमा के चारों ओर घिरी हुई है। इन पत्थरों के गहरे रंग ताज महल की विशेषता को और भी बढ़ाते हैं, और यही कारण है कि यह स्मारक अपनी अद्वितीय सुंदरता और आकर्षण के लिए प्रसिद्ध है।*

➢ ***किला और किलेदारियाँ (Fortifications)***

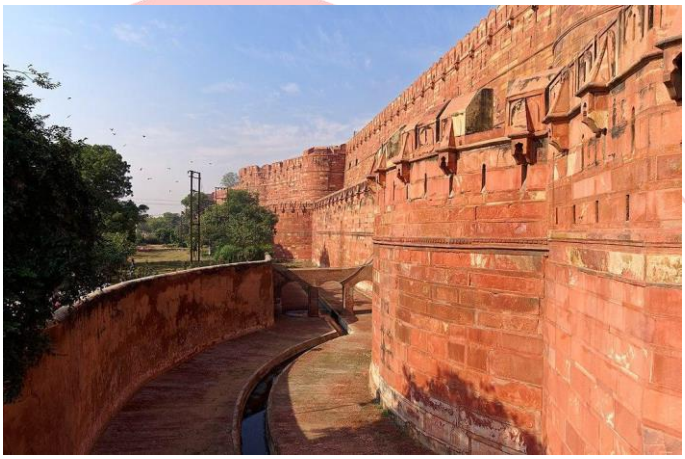

*मुग़ल सम्राज्य द्वारा निर्मित किले और मस्जिदों और मकबरों के साथ, वास्तुकला के कुछ सबसे प्रभावशाली रूप माने जाते हैं। जैसे-जैसे समय में कई साम्राज्यों ने पृथ्वी पर शासन किया, वैसे ही मुगलों को भी अपनी विजय प्राप्त भूमि की रक्षा के लिए किलों और किलेदारियों की आवश्यकता पड़ी। मुगलों ने विशाल रक्षात्मक नेटवर्क के तहत कई बड़े किलों का निर्माण किया। इनमें **लाल किला**, **लाहौर किला**, और **आगरा किला** प्रमुख हैं।*

*ऊपर दी गई **आगरा किले** की छवि में आप देख सकते हैं कि इसे मोटी बलुआ पत्थर की दीवारों से बनाया गया है, जिनमें पहले कई तोपें लगाई गई थीं। ये किले मुगलों के साम्राज्य की रक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा थे और इनकी वास्तुकला में सुरक्षा और शक्ति का प्रतीक झलकता है।*

➢ ***मुग़ल वास्तुकला के बेहतरीन उदाहरण***

मुग़ल साम्राज्य ने 1500 के दशक के प्रारंभ से लेकर 1700 के दशक के प्रारंभ तक अपने क्षेत्र पर शासन किया, और इस दौरान उन्होंने अनगिनत मस्जिदें, किले, मकबरे और अन्य भवन बनाए। नीचे मुग़ल वास्तुकला के कुछ महान उदाहरणों की सूची दी गई है, साथ ही मुग़ल साम्राज्य के इतिहास और उत्पत्ति की झलक भी प्रस्तुत की गई है।

1. ***ताज महल** – आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत*
2. ***लाल किला** – पुराना दिल्ली, दिल्ली, भारत*
3. ***बदशाही मस्जिद** – लाहौर, पंजाब, पाकिस्तान*
4. ***जामा मस्जिद** – पुराना दिल्ली, दिल्ली, भारत*
5. ***जहाँगीर का मकबरा** – लाहौर, पंजाब, पाकिस्तान*
6. ***लाहौर किला** – लाहौर, पंजाब, पाकिस्तान*
7. ***आगरा किला** – आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत*
8. ***इतिमाद-उद-दौला का मकबरा** – आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत*
9. ***अकबर का मकबरा** – आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत*
10. ***हुमायूँ का मकबरा** – नई दिल्ली, दिल्ली, भारत*
11. ***वज़ीर ख़ान मस्जिद** – लाहौर, पंजाब, पाकिस्तान*
12. ***खुसरो बाग़** – इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत*
13. ***दीवाने-ए-खास** – दिल्ली और लाहौर*
14. ***बीबी का मकबरा** – औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत*
15. ***जहाँगीर महल** – ओरछा, मध्य प्रदेश, भारत*
16. ***हिरण मीनार** – शेखुपुरा, पंजाब, पाकिस्तान*
17. ***जामा मस्जिद** – आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत*
18. ***मैरियम-उज़-ज़मानी का मकबरा** – आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत*
19. ***शालिमार बाग़** – लाहौर, पंजाब, पाकिस्तान*
20. ***जामा मस्जिद** – फतेहपुर सीकरी, उत्तर प्रदेश, भारत*
21. ***बुलंद दरवाज़ा** – फतेहपुर सीकरी, उत्तर प्रदेश, भारत*
22. ***शाह जहाँ मस्जिद** – थट्टा, सिंध, पाकिस्तान*
23. ***शेर मंडल** – नई दिल्ली, दिल्ली, भारत*
24. ***इद्रकपुर किला** – मंशीगंज, ढाका डिवीजन, बांग्लादेश*
25. ***सात गुंबज मस्जिद** – मोहम्मदपुर, ढाका डिवीजन, बांग्लादेश*

❖ ***मुग़ल चित्रकला और संगीत***

➢ ***चित्रकला:***

- *मुग़ल चित्रकला की नींव हुमायूँ ने पर्शिया में रहते हुए रखी थी।*
- *हुमायूँ भारत आते समय दो प्रसिद्ध चित्रकार – मीर सय्यद अली और अब्दल समद को साथ लाया था।*
- *अकबर ने कई साहित्यिक और धार्मिक ग्रंथों की चित्रांकन का आदेश दिया था।*
- *अकबर ने विभिन्न हिस्सों से आए चित्रकारों को अपनी अदालत में आमंत्रित किया था।*

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Dear Aspirants, here are the our results in differents exams (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp https://wa.link/6bx90g 1 web.- https://shorturl.at/SgSVX

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 563+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
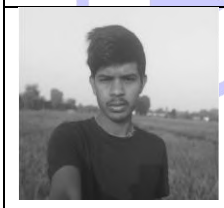	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

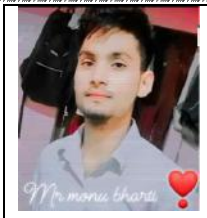	**MONU S/O KAMTA PRASAD**	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
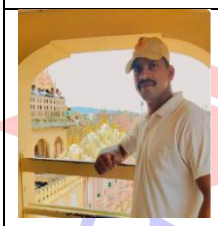	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others.....

Click on the below link to purchase notes

WhatsApp करें - https://wa.link/6bx90g

Online Order करें - https://shorturl.at/5gSVX

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO